महात्मा शेख़सादी

प्रेमचन्द ।

महात्मा शेख़सादी

(जीवन-चरित्र तथा उनके ग्रन्थों का वर्णन)

लेखक —

श्रीयुक्त प्रेमचन्द।

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, १२६ हैरिसन रोड, कलकत्ता।

लाला भगवानदास गुप्त के प्रबन्ध से कमरशल प्रेस,
जुही-कलां, कानपुर में छपी।

प्रथम बार १००० | सम्वत् १९७४ | मूल्य ।=)

विषय सूची ।

परिचय

शेख़ सादी की गणना उन महात्माओं में है जिन के विचारों का प्रभाव केवल ईरान ही में नहीं वरन् समस्त संसार पर पड़ा है। वह कवि थे, लेकिन ऐसे कवि जो किसी उच्च उद्देश्य को पूरा करने के लिए जन्म लेते हैं। उन्होंने केवल काव्य-प्रेमियों के मनोरञ्जन के निमित्त अपनी काव्य-शक्ति का उपयोग नहीं किया। उनका उद्देश्य अपने भाइयों की नीति, विचार तथा व्यवहार का संशोधन करना था और उन्होंने अपनी कविता-शक्ति सर्वस्व इसी उद्देश्य की भेंट कर दी। यदि संसार के किसी कवि के विषय में यह कहा जा सक्ता है कि ईश्वर का सन्देशा वह अपने वन्धुवों को सुनाने के लिए आया था तो वह कवि शेख़ सादी हैं। एक विद्वान् पुरुष का कथन है कि कवि का काम मानवचरित्र का अङ्कन वा भावों का दर्शाना नहीं है, उसका काम उन सच्चाइयों को प्रकट करना है जिनका उसने अपने जीवन में अनुभव किया है। इस दृष्टि से देखिये तो सादी का स्थान बहुत ऊंचा है! मानव-स्वभाव का जितना अनुभव उनको था, संसार को जितना और जिस तरह उन्होंने देखा, उतना कदाचित्

किसी अन्य कवि ने न देखा हो। उन्हों ने जो कुछ लिखा है वह उनका अपना अनुभव है। उस समय पृथ्वी का जो भाग सभ्य समझा जाता था वह सदैव सादी के पैरों तले रहता था। वह बहुधा भ्रमण करते रहते थे और जो अनूठी तथा शिक्षाप्रद बातें देखते थे उन्हें अपने विचार-कोष में संग्रह करते जाते थे। यही कारण है कि शेख़ सादी की गुलिस्ताँ और बोस्ताँ का आज जितना आदर है उतना तुलसीकृत रामायण के सिवा कदाचित् किसी अन्य ग्रन्थ का न होगा। जिसने कुछ थोड़ी सी भी फ़ारसी पढ़ी है वह सादी से अवश्य परिचित है। उनकी दोनों पुस्तकें प्रत्येक पुस्तकालय, प्रत्येक विद्यालय तथा प्रत्येक विद्याप्रेमी के आदर की सामग्री रही हैं। शेख़ सादी केवल पद्य-रचना ही न करते थे, वह गद्य रचना में भी अद्वितीय थे। गुलिस्ताँ का जितना आदर है उतना बोस्ताँ का हर्गिज़ नहीं है। सादी ने स्वयं गुलिस्ताँ पर अपना गर्व प्रकट किया है। बोस्ताँ के टक्कर की पुस्तकें फ़ारसी में वर्तमान हैं। लेकिन गुलिस्ताँ की समानता करनेवाली कोई पुस्तक नहीं है। अनेक बड़े बड़े लेखकों ने इस ढङ्ग की पुस्तकें लिखने का प्रयत्न किया, किन्तु सफल न हुए। इसकी भाषा इतनी मधुर, लेख-शैली इतनी हृदय-ग्राही, और वाक्य-रचना ऐसी अनूठी है कि नीति-विषय पर ऐसा ग्रन्थ संसार भर में न होगा। ईसप की नीति-कथायें बहुत प्रसिद्ध हैं; इसी प्रकार पंचतंत्र और हितोपदेश की कथाओं का भी बहुत प्रचार है, पर इन पुस्तकों में

कथायें प्रायः लम्बी और पशु-पक्षी आदि के सम्बन्ध में हैं। सादी के पास निज अनुभूत घटनाओं का इतना बाहुल्य है, और वह ऐसे मौक़े से उन्हें काम में लाते हैं कि उन्हें कल्पित कथाओं के गढ़ने की आवश्यकता ही नहीं थी। वर्त्तमान समय में अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध ग्रन्थकार डाक्टर स्माइल्स, ब्लैकी, कावेट, मारडन आदि ने चरित्र-सुधार और नीति पर अच्छी अच्छी पुस्तकें लिखी हैं, किन्तु विचार करके देखने पर इनकी पुस्तकों में बूढ़े शेख़ सादी की लेखशैली साफ़ झलकती है। सादी ने इस पुस्तक का नाम बहुत ही उचित रक्खा। यह ऐसी मनोरम वाटिका है कि आज छः शताब्दियों के बीतजाने पर भी वैसी ही हरी-भरी, नवपुष्पित और सुसज्जित बनी हुई है। संसार में ऐसी कदाचित् ही कोई उन्नत भाषा होगी जिसमें इसका अनुवाद न हुआ हो। अतएव ऐसे महान् लेखक से हिन्दी-प्रेमियों का परिचय कराना आवश्यक है।

शेख़ सादी

प्रथम अध्याय

जन्म

ख़ मुसलहुद्दीन, उपनाम सादी, का जन्म सन् ११७२ ई० में शीराज़ नगर के पास एक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम अब्दुल्लाह, और दादा का नाम शरफुद्दीन था। शेख़ इस घराने की सम्मानसूचक पदवी थी। क्योंकि उनकी वृत्ति धार्मिक शिक्षा-दीक्षा देने की थी। लेकिन इनका ख़ानदान सैयद था। जिस प्रकार अन्य महान् पुरुषों के जन्म के सम्बन्ध में अनेक अलौकिक घटनायें प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार सादी के जन्म के विषय में भी लोगों ने ख़ूब कल्पनायें की हैं। लेकिन उनके उल्लेख की ज़रूरत नहीं जान पड़ती। सादी का जीवन हिन्दी तथा संस्कृत के अनेक कवियों के जीवन की भांति ही अन्धकारमय है और उनकी जीवनी के सम्बन्ध में हमको अनुमान का सहारा लेना पड़ता है। यद्यपि उनका जीवनवृत्तान्त फ़ारसी ग्रन्थों में बहुत विस्तार के साथ लिखा हुआ है तथापि उनमें अनुमान की मात्रा

भांति सादी भी दुर्व्यसनों में पड़ जाते लेकिन उनके पिता की धार्मिक शिक्षा ने उनकी रक्षा की।

यद्यपि शीराज़ में उस समय विद्वानों की कमी न थी और बड़े बड़े विद्यालय स्थापित थे, किन्तु वहाँ के बादशाह साद बिन ज़ंगी को लड़ाई करने की ऐसी धुन थी कि वह बहुधा अपनी सेना लेकर एराक़ पर आक्रमण करने चला जाया करता था, और अपने राज्य-काज की तरफ़ से बेपरवाह हो जाता था। उसके पीछे देश में घोर उपद्रव मचते रहते थे और बलवान शत्रु देश में मार काट मचा देते थे। ऐसी कई दुर्घटनायें देखकर सादी का जी शीराज़ से उचट गया। ऐसी उपद्रव की दशा में पढ़ाई क्या होती? इस लिए सादी ने युवावस्था में ही शीराज़ से बग़दाद को प्रस्थान किया।

दूसरा अध्याय

शिक्षा

उस समय शीराज़ से बुग़दाद की यात्रा बहुत कठिन थी। क़ाफ़िले चला करते थे। सादी भी एक क़ाफ़िले के साथ हो लिये। उनके घर पर जो माल असबाब था वह सब उन्हों ने मित्रों और ग़रीबों की भेंट कर दिया। केवल एक 'कुरान,' जो उनको उनके आदि गुरु ने दी थी, अपने पास रख ली। इससे विदित होता है कि वह कैसे त्यागी और साहसी पुरुष थे। मार्ग में बीमार पड़ जाने के कारण उनका साथ क़ाफ़िले वालों से छूट गया। लेकिन वह अकेले ही चल खड़े हुए। जिस गांव में वह ठहरे थे वहां लोगों ने समझा था कि आगे का मार्ग बहुत विकट है, किन्तु सादी के पास क्या रक्खा था कि वह चोरों से डरते। थोड़ी ही दूर गये थे कि डाकुओं से उनका सामना हो गया। सादी ने उन से विनयपूर्वक कहा कि मैं ग़रीब विद्यार्थी हूं, विद्योपार्जन के लिए बुग़दाद जा रहा हूं, मेरे पास शरीर पर के कपड़ों और इस कुरान के सिवाय और कुछ

नहीं है। यदि तुम्हारा जी चाहे तो इन वस्तुओं को लेजाओ, लेकिन कृपा करके इनका दुरुपयोग मत करना; किसी ग़रीब विद्यार्थी को दे देना। सादी के इस कथन का यह असर हुआ कि डाकू लज्जित हो गये और सदैव के लिए उन्होंने इस कुमार्ग को छोड़ने का संकल्प कर लिया। उनमें से दो आदमी सादी की रक्षा के लिए साथ चले। सद्व्यवहार में कितना प्रभाव है, यह इस घटना से भली भांति प्रमाणित होजाता है। लेकिन ईश्वर को स्वीकार था कि इस यात्रा में सादी को ईश्वरीय न्याय और दण्ड का अनुभव हो जाय। उसके दोनों साथियों में से एक को तो सांप ने काट खाया और दूसरा एक पेड़ पर से गिर कर मर गया। दोनों ने बड़े कष्ट से एड़ियां रगड़ कर जान दी। उनके जीवन के इस दुष्परिणाम ने सादी के हृदय पर गहरा असर डाला और उसने निश्चय कर लिया कि कभी किसी को कष्ट न दूंगा और यथासाध्य दूसरों के साथ दया का व्यवहार करूंगा।

बग़दाद उस समय तुर्क साम्राज्य की राजधानी था। मुसलमानों ने बसरा से लेकर यूनान तक विजय प्राप्त कर ली थी और सम्पूर्ण एशिया ही में नहीं, यूरुप में भी उनका सा वैभवशाली और कोई राज्य नहीं था। इसी समृद्धिशाली राज्य का निवासस्थान था। राजा विक्रमादित्य के समय में उज्जैन की और मौर्य्यवंश

के राज्य-काल में पाटलिपुत्र की जो उन्नति थी वही इस समय बुग़दाद की थी। बुग़दाद के बादशाह ख़लीफ़ा कहलाते थे। रौनक़ और आबादी में यह शहर शीराज़ से कहीं चढ़ बढ़ कर था। यहां के कई ख़लीफ़ा बड़े विद्याप्रेमी थे। उन्होंने सैकड़ों विद्यालय स्थापित किये थे। दूर दूर से विद्वान् लोग पठन-पाठन के निमित्त आया करते थे। यह कहने में अत्युक्ति न होगी कि बुग़दाद का सा उन्नत नगर उस समय संसार में नहीं था। बड़े बड़े आलिम, फ़ाज़िल, मौलवी, मुल्ला, विज्ञानवेत्ता और दार्शनिकों ने जिनकी रचनायें आज भी गौरव की दृष्टि से देखी जाती हैं बुग़दाद ही के विद्यालयों में शिक्षा पाई। विशेषतः "मदरसा निज़ामियां" वर्तमान आक्सफ़ोर्ड या बर्लिन की युनिवर्सिटियों से किसी तरह कम न था। सात आठ सहस्र छात्र उसमें शिक्षालाभ करते थे। उसके अध्यापकों और अधिष्ठाताओं में ऐसे ऐसे लोग होगये हैं जिनके नाम पर मुसलमानों को आज भी गर्व है। इस मदरसे की बुनियाद एक ऐसे विद्याप्रेमी ने डाली थी जिसके शिक्षाप्रेम के सामने कारनेगी भी शायद लज्जित हो जायं। उसका नाम 'निज़ामुलमुल्कतूसी' था। 'जलालुद्दीन सलजूक़ी' के समय में वह राज्य का प्रधान मन्त्री था। उसने बुग़दाद के अतिरिक्त बसरा, नेशापुर, इसफहान आदि नगरों में भी विद्यालय स्थापित किये थे। राज्यकोष के अतिरिक्त अपने निज के असंख्य रुपये शिक्षोन्नति में व्यय किया करता था।

'निज़ामियां' मदरसे की ख्याति दूर दूर तक फैली हुई थी। सादी ने इसी मदरसे में प्रवेश किया। यह निश्चय नहीं है कि वह कितने दिनों बुग़दाद में रहा। लेकिन उसके लेखों से ज्ञात होता है कि वहां *फ़िक़ह, हदीस आदि के अतिरिक्त उसने विज्ञान, गणित, खगोल, भूगोल, इतिहास आदि विषयों का अच्छी तरह अध्ययन किया और "अल्लामा" की सनद प्राप्त की। इतने गहन विषयों में सिद्धहस्त होने के लिए सादी को १० वर्षों से कम न लगे होंगे।

काल की गति विचित्र है। सादी ने बुग़दाद से जब प्रस्थान किया तो उस समय उस नगर पर लक्ष्मी और सरस्वती दोनों ही की कृपा थी। लेकिन लगभग पचास वर्ष के पश्चात् उसने उसी समृद्धि-शाली नगर को हलाकू खां के हाथों नष्टभ्रष्ट होते देखा और अन्तिम् ख़लीफ़ा जिसके दर्बार में बड़े बड़े राजा और रईसों की भी मुश्किल से पहुंच होती थी बड़े अपमान और क्रूरता के साथ मारा गया।

सादी के हृदय पर इस घोर विप्लव का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने अपने लेखों में बारम्बार राजाओं को नीति की रक्षा, प्रजापालन, तथा न्यायपरता का उपदेश दिया है। उसका विचार था, और उसके यथार्थ

---

* फ़िक़ह — धर्मशास्त्र। हदीस — पुराण।

होने में कोई सन्देह नहीं, कि न्यायप्रिय, प्रजाभक्त राजा को कोई शत्रु पराजित नहीं कर सक्ता। जब इन गुणों में कोई अंश कम होजाता है तभी उसे बुरे दिन देखने पड़ते हैं। सादी ने दीनों पर दया, दुःखियों से सहानुभूति, देश भाइयों से प्रेम आदि गुणों का बड़ा महत्व दर्शाया है। कोई आश्चर्य्य नहीं कि उसके उपदेशों में जो सजीवता देख पड़ती है वह इन्हीं हृदयविदारक दृश्यों से उत्पन्न हुई हो।

तीसरा अध्याय

देश-भ्रमण
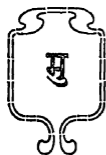
मुसलमान यात्रियों में *इब्नबतूता सब से श्रेष्ठ समझा जाता है। सादी के विषय में विद्वानों ने स्थिर किया है कि उसकी यात्रायें 'बतूता' से कुछही कम थीं। उस समय के सभ्य संसार में ऐसा कोई स्थान न था जहाँ सादी ने पदार्पण न किया हो। वह सदैव पैदल सफ़र किया करते थे। इससे विदित हो सक्ता है कि उनका स्वास्थ्य कैसा अच्छा रहा होगा। साथही वह कितने परिश्रमी थे। साधारण वस्त्रों के अतिरिक्त वह अपने साथ कोई सामान न रखते थे। हाँ, रक्षा के लिए एक कुल्हाड़ी लेलिया करते थे। आज कल के यात्रियों की भाँति पाकेट में नोट बुक दाबकर गाइड (पथदर्शक) के साथ प्रसिद्ध स्थानों का देखना और घर पहुंचकर अपनी यात्रा का वृत्तान्त छपवाकर अपनी विद्वत्ता दर्शाना सादी का उद्देश्य न था। वह जहाँ जाते थे महीनों रहते थे। जन-

---

*इब्नबतूता प्रख्यात यात्री था। उसका ग्रंथ सफ़रनामा महत्वका है।

समुदाय के रीतिरिवाज रहनसहन और आचारव्यवहार को देखते थे। विद्वानोंका सत्संग करते थे और जो विचित्र बातें देखते थे उन्हें अपने स्मरण-कोष में संग्रह करते जाते थे। उनकी गुलिस्ताँ और बोस्ताँ दोनों ही पुस्तकें इन्हीं अनुभवों के फल हैं। लेकिन उन्हों ने विचित्र जीव-जन्तुओं, या प्रकृतिक दृश्यों, अथवा अद्भुत वस्त्राभूषणों के गपोड़ों से अपनी किताबें नहीं भरीं। उनकी दृष्टि सदैव ऐसी बातों पर रहा करती थी कि जिनसे कोई सदाचार-सम्बन्धी परिणाम हो सक्ता हो, जिनसे मनोवेग और वृत्तियों का ज्ञान हो, जिनसे मनुष्य की सज्जनता या दुर्जनता प्रकट हो। सदाचरण, पारस्परिक व्यवहार, और नीति-पालन, उनके उपदेशों के विषय थे। वह ऐसी ही घटनाओं पर विचार करते थे जिनसे इस उच्च उद्देश की पूर्ति हो। यह आवश्यक नहीं था कि घटनायें अद्भुत ही हों। नहीं, वह साधारण बातों से भी ऐसे सिद्धान्त निकाल लेते थे जो साधारण बुद्धि की पहुंच से बाहर होते थे। निम्नलिखित दो चार उदाहरणों से उनकी यह सूक्ष्म-दर्शिता स्पष्ट हो जायगी।

(१) मुझे 'केश' नामी द्वीप में एक सौदागर से मिलने का संयोग हुआ। उसके पास सामान से लदे हुये १५० ऊंट, और ४० ख़िदमतगार थे। उसने मुझे अपना अतिथि बनाया। सारी रात अपनी राम-कहानी सुनाता रहा कि मेरा इतना माल तुर्किस्तान में पड़ा है,

इतना हिन्दुस्तान में, इतनी भूमि अमुक स्थान पर है, इतने मकान अमुक स्थान पर, कभी कहता मुझे मिश्र जाने का शौक़ है लेकिन वहां की जलवायु हानिकारक है। जनाब शेख़ साहेब, मेरा विचार एक और यात्रा करने का है, अगर वह पूरी हो जाय तो फिर एकान्तवास करने लगूं। मैंने पूछा कि वह कौनसी यात्रा है ? तो आप बोले कि पारस का गन्धक चीन देश में लेजाना चाहता हूं, क्योंकि सुना है कि वहां इसके अच्छे दाम खड़े होते हैं, और चीन के प्याले रूम लेजाना चाहता हूं। वहां से रूम का '*देबा' लेकर हिन्दुस्तान में, और हिन्दुस्तान की फौलाद 'हलब' में और हलब का आईना 'यमन' में, और यमन की चादरें लेकर पारस लौट जाऊंगा। फिर चुपके से एक दूकान कर लूंगा और सफ़र छोड़ दूंगा आगे ईश्वर मालिक है। उसकी यह तृष्णा देख कर मैं उकता गया और बोला :—

"आपने सुना होगा कि 'ग़ोर' का एक बहुत बड़ा सौदागर जब घोड़े से गिर कर मरने लगा तो उसने एक ठंडी सांस लेकर कहा कि तृष्णावान् मनुष्य की इन दो आंखों को या तो सन्तोष भर सक्ता है या क़ब्र की मिट्टी।"

---

* एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा।

(२) कोई थका मांदा भूख का मारा बटोही एक धनवान आदमी के घर पर जा निकला। वहाँ उस समय आमोद-प्रमोद की बातें हो रही थीं। किन्तु उस बेचारे को उन में ज़रा भी मज़ा न आता था। अन्त में गृह के स्वामी ने कहा जनाब, कुछ आप भी कहिये। 'मुसाफ़िर ने जवाब दिया, मेरा भूख से बुरा हाल है।' स्वामी ने लौंडी से कहा, खाना ला। लौंडी ने दस्तरख़्वान बिछा कर खाना रक्खा। लेकिन अभी सब चीज़ें तैयार न थीं। स्वामी ने कहा, कृपा कर ज़रा ठहर जाइये अभी कोफ़ता तैयार नहीं है। इसपर मुसाफ़िर ने यह शेर पढ़ा—

" कोफ़ता दर सफ़रये मा गो मुबाश,
कोफ़ता रा नान-तिही कोफ़तास्त। "

भावार्थ—मुझे *कोफ़ता की ज़रूरत नहीं है। भूखे आदमी को ख़ाली रोटी ही कोफ़ता है।

(३) एक समय मैं मित्रों और बन्धुओं से उकता कर क़िलस्तीन के जंगल में रहने लगा। लेकिन एक दिन ईसाइयों ने मुझे क़ैद कर लिया। उस समय मुसलमानों और ईसाइयों में लड़ाई हो रही थी। मुझे भी खाई खोदने के काम पर लगा दिया। कुछ दिनों के पश्चात् वहां हलबदेश का एक धनाढ्य मनुष्य आया,

* एक प्रकार का व्यंजन।

जो मुझे पहचानता था। उसे मुझ पर दया आई। वह १०* दीनार देकर मुझे क़ैद से छुड़ा कर अपने घर लेगया और कुछ दिनों के बाद अपनी लड़की से मेरा निकाह कर दिया। वह स्त्री दुष्टा थी। मेरा आदर-सत्कार तो क्या करती, एक दिन क्रुद्ध होकर बोली "क्यों साहेब, तुम वही हो ना जिसे मेरे पिता ने १० दीनार पर ख़रीदा था।" मैं ने कहा, "जी हां, मैं वही लाभकारी वस्तु हूं जिसे आपके पिता ने १० दीनार पर ख़रीद कर आपके हाथ १०० दीनार पर बेंच दिया।" यह वही मसल हुई कि एक धर्मात्मा पुरुष किसी बकरी को भेड़िये के पंजे से छुड़ा लाया। लेकिन रात को वही बकरी उसने ख़ुद बध करडाली।

(४) मुझे एक बार कई फ़क़ीर साथ सफ़र करते हुए मिले। मैं अकेला था। उनसे कहा कि मुझे भी साथ ले चलिये। उन्होंने स्वीकार न किया। मैंने कहा कि यह रुखाई साधुओं को शोभा नहीं देती। तब उन्होंने जवाब दिया, नाराज़ होने की बात नहीं, कुछ दिन हुये एक बटोही इसी तरह हमारे साथ हो लिया था। एक दिन एक क़िले के नीचे हम लोग ठहरे। उस मुसाफ़िर ने आधी रात को हमारा लोटा उठाया कि लघुशंका करने जाता हूं। लेकिन ख़ुद ग़ायब हो गया। यहांतक भी कुशल थी। लेकिन उसने क़िले में

---

* एक सोने का सिक्का जो लगभग २५) के बराबर होता है।

जाकर कुछ जवाहरात चुराये और खिसक गया। प्रातःकाल किले वालों ने हमको पकड़ा। बहुत खोज के पीछे जब उस दुष्ट का पता मिला तब जाकर हम लोग कैद से मुक्त हुए। इस लिए हम लोगों ने प्रण कर लिया है कि किसी अनजान आदमी को अपने साथ न लेंगे।

(५) दो खुरासानी फ़क़ीर साथ साथ सफ़र कर रहे थे। उन में एक तो बुड्ढा था जो दो दिन के बाद खाना खाता था। दूसरा जवान था जो दिन में तीन चार भोजन पर हाथ फेरता था। संयोग से दोनों किसी शहर में जासूसी के भ्रम में पकड़ गये। उन्हें एक कोठरी में बन्द करके दीवार चुनवा दी गई। दो सप्ताह के बाद मालूम हुआ कि दोनों निरपराध हैं। इस लिए बादशाह ने आज्ञा दी कि उन्हें छोड़ दिया जाय। जब कोठरी की दीवार तोड़ी गई तो देखा गया कि जवान तो मरा पड़ा है और बूढ़ा जीवित है। इस पर लोग बड़ा कौतूहल करने लगे। इतने में एक बुद्धिमान पुरुष उधर से आ निकला। उसने कहा यह तो कोई आश्चर्य्य का विषय नहीं, यदि इसके विपरीत हो तो आश्चर्य्य की बात थी।

(६) एक साल हाजियों के क़ाफ़िले में फूट पड़ गई। मैं भी साथ ही यात्रा कर रहा था। हमने खूब लड़ाइयां कीं। एक ऊंटवान ने हमारी यह दशा

देख कर अपने साथी से कहा, खेद की बात है कि शतरंज के प्यादे तो जब मैदान पार कर लेते हैं तो वज़ीर बन जाते हैं, मगर हाजी प्यादे ज्यों ज्यों आगे बढ़ते हैं, पहले से भी ख़राब होते जाते हैं। इनसे कहो, तुम क्या हज करोगे जो यों एक दूसरे को काटेखाते हो। हाजी तो तुम्हारे ऊंट हैं जो कांटे खाते हैं और बोझ भी उठाते हैं।

(७) रूम में मैं एक साधु महात्मा की प्रशंसा सुन कर उनसे मिलने गया। उन्होंने हमारा विशेष स्वागत किया किन्तु खाना न खिलाया। रात को वह तो अपनी माला फेरतेरहे और हमें भूख से नींद न आई। सुबह हुई तो उन्हों ने फिर वही कल का सा आगत-स्वागत आरम्भ किया। इस पर हमारे एक मुंहफट मित्र ने कहा "महाशय अतिथि के लिए इस सत्कार से अधिक भोजन की ज़रूरत है। भला ऐसी उपासना से कब उपकार होसक्ता है जब कई आदमी भूख के मारे करवटें बदलते रहें।"

(८) एक बार मैंने एक मनुष्य को तेंदुए पर सवार देखा। भय से कांपने लगा। उसने यह देखकर हंसते हुए कहा, सादी, डरता क्यों है, यह कोई आश्चर्य्य की बात नहीं। यदि मनुष्य ईश्वर की आज्ञा से मुंह न मोड़े तो उसकी आज्ञा से भी कोई मुंह नहीं मोड़ सक्ता।

(६) सादी ने भारत की यात्रा भी की थी। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि वह चार वार हिन्दुस्तान आये, परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं। हां, उनका एक बेर यहां आना निर्भ्रान्त है। वह गुजरात तक आये और शायद वहीं से लौट गये। सोमनाथ के विषय में उन्होंने एक घटना लिखी है जो शायद सादी की यात्रावृत्तान्त में सब से अधिक कौतूहल-जनक है। वे लिखते हैं कि जब मैं सोमनाथ पहुंचा तो देखा कि सहस्रों स्त्री-पुरुष मन्दिर के द्वार पर खड़े हैं और उनमें कितने ही मुरादें मांगने के लिए दूर दूर से आये हैं। मुझे उनकी मूर्खता पर खेद हुआ। एक दिन मैंने कई आदमियों के सामने मूर्तिपूजा की निन्दा की। इस पर मन्दिर के बहुत से पुजारी जमा होगये, और मुझे घेर लिया। मैं डरा कि कहीं यह लोग मुझे पीटने न लगें। मैं बोला, कि मैंने कोई बात अश्रद्धा से नहीं कही। मैं तो खुद इस मूर्ति पर मोहित हूं लेकिन मैं अभी यहां के गुप्त-रहस्यों को नहीं जानता इसलिए चाहता हूं कि इस तत्व का पूर्ण-ज्ञान प्राप्त करके उपासक बनूँ। पुजारियों को मेरी यह बातें पसन्द आईं उन्होंने कहा आज रात को तू मन्दिर में रह। तेरे सब भ्रम मिट जायंगे। मैं रात भर वहां रहा। प्रातःकाल जब नगरवासी वहां एकत्रित हुए तो उस मूर्ति ने अपने हाथ उठाये जैसे कोई प्रार्थना कर रहा हो। यह देखते ही सब लोग जय जय पुकारने लगे। जब

लोग चले गये तो पुजारी ने हंस कर मुझसे कहा क्यों अब तो कोई शंका नहीं रही? मैं कृत्रिम-भाव बना कर रोने लगा और लज्जा प्रगट की। पुजारियों को मुझ पर विश्वास होगया। मैं कुछ दिनों के लिए उनमें मिल गया। जब मन्दिरवालों का मुझ पर विश्वास जम गया तो एक रात को अवसर पाकर मैंने मन्दिर का द्वार बन्द कर दिया और मूर्ति के सिंहासन के निकट जाकर ध्यान से देखने लगा। वहां मुझे एक परदा दिखाई पड़ा जिसके पीछे एक पुजारी बैठा हुआ था। उसके हाथ में एक डोर थी। मुझे मालूम हो गया कि जब यह उस डोरे को खींचता है तो मूर्ति का हाथ उठ जाता है। इसी को लोग दैविक बात समझते हैं।

यद्यपि सादी मिथ्यावादी नहीं थे तथापि इस वृत्तान्त में कई बातें ऐसी हैं जो तर्क की कसौटी पर नहीं कसी जा सकीं। लेकिन इतना मानने में कोई आ-पत्ति न होनी चाहिये कि सादी गुजरात आये और सोम-नाथ में ठहरे थे।

चौथा अध्याय

सादी का शीराज़ में पुनरागमन
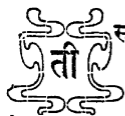
तीस चालीस साल तक भ्रमण करने के बाद सादी को जन्मभूमि का स्मरण हुआ। जिस समय वह शीराज़ से चले थे, वहाँ अशान्ति फैली हुई थी। कुछ तो इस कुदशा, और कुछ विद्यालय की इच्छा से प्रेरित होकर सादी ने देशत्याग किया था। लेकिन अब शीराज़ की वह दशा न थी। साद बिन-ज़ंगी की मृत्यु होचुकी थी और उसका बेटा अताबक अबूबक्र राज्यगद्दी पर था। यह एक न्यायप्रिय, राज्य-कार्य्य-कुशल राजा था। उसके सुशासन ने देश की बिगड़ी हुई अवस्था को बहुत कुछ सुधार दिया था। सादी संसार को खूब देख चुके थे। अवस्था भी वह आ पहुंची थी जब मनुष्य को एकान्तवास की इच्छा होने लगती है, और सांसारिक झगड़ों से मन उदासीन होजाता है। अतएव अनुमान कहता है कि ६५ या ७० वर्ष की अवस्था में सादी शीराज़ आये। यहाँ समाज और राजा दोनों ही ने उनका उचित आदर किया। लेकिन सादी अधिकतर एकान्तवास ही में रहते थे। राजदरबार में बहुत कम आते जाते। समाज से भी

किनारे रहते । इसका कदाचित् एक कारण यह भी था कि अताबक अबूबक्र को मुल्लाओं और विद्वानों से कुछ चिढ़ थी । वह उन्हें पाखण्डी और उपद्रवी समझता था । कितने ही सर्वमान्य विद्वानों को उसने देश से निकाल दिया था। इसके विपरीत वह मूर्ख फ़क़ीरों की बहुत सेवा और सत्कार करता । जितना ही अपढ़ फ़क़ीर होता उतना ही उसका मान अधिक करता था। सादी विद्वान भी थे, मुल्ला भी थे, यदि वह प्रजा से मिलते-जुलते तो उनका गौरव अवश्य बढ़ता और बादशाह को उनसे खटका होजाता। इसके सिवा यदि वह राजदरबार के उपासक बनजाते तो विद्वान लोग उन पर कटाक्ष करते । इस लिए सादी ने दोनों से मुँह मोड़ने ही में अपना कल्याण समझा, और तटस्थ रहकर दोनों के कृपापात्र बने रहे। उन्हों ने गुलिस्ताँ और बोस्ताँ की रचना शीराज़ ही में की, दोनों ग्रन्थों में सादी ने मूर्ख साधु, फ़क़ीरों की ख़ूब ख़बर ली है, और राजा, बादशाहों को भी न्याय, धर्म और दया का उपदेश किया है। अन्ध-विश्वास पर सैकड़ों जगह मार्मिक चोटें की हैं। इनका तात्पर्य्य यही था कि अताबक अबूबक्र सचेत हो जाय और विद्वानों से द्रोह करना छोड़ दे। सादी को बादशाह की अपेक्षा युवराज से अधिक स्नेह था। इसका नाम फ़ख़रुद्दीन था। वह बग़दाद के ख़लीफ़ा के पास कुछ तुहफ़े भेंट लेकर मिलने गया था। लौटती बार मार्ग ही में उसे अपने पिता के मरने का समाचार

मिला। युवराज बड़ा पितृभक्त था। यह ख़बर सुनते ही वह शोक से बीमार पड़गया और रास्ते ही में परलोक को सिधार गया। इन दोनों मृत्युओं से सादी को इतना शोक हुआ कि वह शीराज़ से फिर निकल खड़े हुए और बहुत दिनों तक देशभ्रमण करते रहे। मालूम होता है कि कुछ काल के उपरान्त वह फिर शीराज़ आ गये थे, क्योंकि उनका देहान्त यहीं हुआ। उनकी क़ब्र अभी तक मौजूद है, लोग उसकी पूजा (ज़ियारत) करने जाया करते हैं। लेकिन उनकी सन्तानों का कुछ हाल नहीं मिलता है.। सम्भवतः सादी की मृत्यु १२८८ ई० के लगभग हुई। उस समय उनकी अवस्था ११६ वर्ष की थी। शायद ही किसी साहित्यसेवी ने इतनी बड़ी उम्र पाई हो।

सादी के प्रेमियों में अलाउद्दीन नाम का एक बड़ा उदार व्यक्ति था। जिन दिनों युवराज फ़ख़रुद्दीन की मृत्यु के पीछे सादी बग़दाद आये तो अलाउद्दीन वहाँ के सुल्तान अबाक़ा ख़ाँ का वज़ीर था। एक दिन मार्ग में सादी से उसकी भेंट हो गई। उसने बड़ा आदर-सत्कार किया। उस समय से अन्त तक वह बड़ी भक्ति से सादी की सेवा करता रहा। उसके दियेहुए धन से सादी अपने व्यय के लिए थोड़ा सा लेकर शेष दीनों को दान कर दिया करते थे। एक बार ऐसा हुआ कि अलाउद्दीन ने अपने एक ग़ुलाम के हाथ सादी के पास ५०० दीनार भेजे। ग़ुलाम जानता था कि शेख़साहब कभी

किसी चीज़ को गिनते तो हैं नहीं, अतएव उसने धूर्ततः से १५० दीनार निकाल लिये । सादी ने धन्यवाद में एक कविता लिखकर भेजी, उसमें ३५० दीनारों का ही ज़िक्र था । अलाउद्दीन वहुत लज्जित हुआ, गुलाम को दण्ड दिया और अपने एक मित्र को जो शीराज़ में किसी उच्च पद पर नियुक्त था लिखभेजा कि सादी को १० हज़ार दीनार दे दो । लेकिन इस पत्र के पहुंचने से २ दिन पहले ही उनके यह मित्र परलोक सिधार चुके थे, रुपये कौन देता ? इसके वाद अलाउद्दीन ने अपने एक परमविश्वस्त मनुष्य के हाथ सादी के पास ५० हज़ार दीनार भेजे । इस धन से सादी ने एक धर्मशाला बनवादी । मरते समय तक शेख़ सादी इसी धर्मशाला में निवास करते रहे । उसी में अब उनकी समाधि है ।

पाँचवाँ अध्याय

सादी की रचनायें और उनका महत्व

सादी के रचित ग्रन्थों की संख्या १५ से अधिक है। इनमें ४ ग्रन्थ केवल ग़ज़लों के हैं। एक दो ग्रन्थों में वह क़सीदे दर्ज हैं जो उन्होंने समय समय पर बादशाहों या वज़ीरों की प्रशंसा में लिखे थे। इन में एक अरबी भाषा में है। दो ग्रन्थ भक्तिमार्ग पर लिखे गये हैं। यद्यपि उनकी समस्त रचनाओं में मौलिकता ओज विद्यमान है, यहाँतक कि कितने ही बड़े बड़े कवियों ने उन्हें ग़ज़लों का बादशाह माना है। लेकिन सादी की ख्याति और कीर्त्ति विशेषतः उनकी गुलिस्ताँ और बोस्ताँ पर निर्भर है। सादी ने सदाचार का उपदेश करने के लिए जन्म लिया था और उनके क़सीदों और ग़ज़लों में भी यही प्रधान गुण है। उन्हों ने क़सीदों में भाटपंना नहीं किया है, झूठी तारीफ़ों के पुल नहीं बांधे हैं। ग़ज़लों में भी हिज्र और विसाल, ज़ुल्फ़ और कमर, के दुखड़े नहीं रोये हैं। कहीं भी सदाचार को नहीं छोड़ा। तो फिर गुलिस्ताँ और बोस्ताँ का कहना ही क्या? इनकी तो रचना ही उपदेश के निमित्त हुई थी। इन दोनों ग्रन्थों को फ़ारसी साहित्य का सूर्य और

चन्द्र कहें तो अत्युक्ति न होगी। उपदेश का विषय बहुत शुष्क समझा जाता है, और उपदेशक तो सदैव से अपनी कड़वी, और नीरस बातों के लिए बदनाम रहते हैं। नसीहत किसी को अच्छी नहीं लगती। इसीलिए विद्वानों ने इस कड़वी औषधि को भांति भांति के मीठे शर्बतों के साथ पिलाने की चेष्टा की है। कोई चील-कौवे की कहानियां गढ़ता है, कोई कल्पित कथायें नमक मिर्च लगाकर बखान करता है। लेकिन सादी ने इस दुस्तर-कार्य्य को इतनी विलक्षण कुशलता और बुद्धिमत्ता से पूरा किया है कि उनका उपदेश काव्य से भी अधिक सरस और सुबोध हो गया है। ऐसा चतुर उपदेशक कदाचित् ही किसी दूसरे देश में उतपन्न हुआ हो।

सादी का सर्वोत्तम गुण वह वाक्यनिपुणता है, जो स्वाभाविक होती है और उद्योग से प्राप्त नहीं हो सक्ती। वह जिस बात को लेते हैं उसे ऐसे उत्कृष्ट और भाव-पूर्ण शब्दों में वर्णन करते हैं कि जो अन्य किसी के ध्यान में भी नहीं आ सक्ते। उनमें कटाक्ष करने की शक्ती के साथ साथ ऐसी मार्मिकता होती है कि पढ़नेवाले मुग्ध हो जाते हैं। उदाहरण की भांति इस बात को कि पेट पापी है, इसके कारण मनुष्य को बड़ी कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं, वह इस प्रकार वर्णन करते हैं :—

" अगर ज़ौरे शिकम न बूदे, हेच मुर्ग़ दर दाम न उफ़तादे, बल्कि सैयाद ख़ुद दाम न निहादे। "

भाव—यदि पेट की चिन्ता न होती तो कोई चिड़िया जाल में न फँसती, बल्कि कोई बहेलिया जाल ही न बिछाता।

इसी तरह इस बात को कि न्यायाधीश भी रिश्वत से वश में हो जाते हैं, वह यों बयान करते हैं :—

"हमा कस रा दन्दाँ बतुर्शी कुन्द गरदद,
मगर क़ाज़ियाँ रा बशीरीनी।"

भाव—अन्य मनुष्यों के दाँत खटाई से गुट्ठल हो जाते हैं लेकिन न्यायकारियों के मिठाई से।

उनको यह लिखना था कि भीख माँगना जो एक निन्द्य कर्म है उसका अपराध केवल फ़क़ीरों ही पर नहीं बल्कि अमीरों पर भी है, इसको वह इस तरह लिखते हैं :—

"अगर शुमा.रा इन्साफ़ बूदे व मारा क़नाअत,
रस्मे सवाल अज़ जहान बरख़ास्ते।"

भाव—यदि तुम में न्याय होता और हममें सन्तोष, तो संसार में माँगने की प्रथा ही उठजाती।

इन दोनों ग्रन्थों का दूसरा गुण उनकी सरलता है।

यद्यपि इन में एक वाक्य भी नीरस नहीं है, किन्तु भाषा ऐसी मधुर और सरल है कि उस पर आशचर्य्य होता है। साधारण लेखक जब सजीली भाषा लिखने की चेष्टा करता है तो उस में कृत्रिमता आजाती है लेकिन सादी ने सादगी और सजावट का ऐसा मिश्रण कर दिया है कि आज तक किसी अन्य लेखक को उस शैली के अनुकरण करने का साहस न हुआ, और जिन्हों ने साहस किया, उन्हें मुँह की खानी पड़ी। जिस समय गुलिस्ताँ की रचना हुई उस समय फ़ारसी भाषा अपनी बाल्यावस्था में थी। पद्य का तो प्रचार हो गया था लेकिन गद्य का प्रचार केवल बात-चीत, हाट-बाज़ार में था। इस लिए सादी को अपना मार्ग आप बनाना था। वह फ़ारसी गद्य के जन्मदाता थे। यह उनकी अद्भुत प्रतिभा है कि आज ६०० वर्ष के उपरान्त भी उनकी भाषा सर्वोत्तम समझी जाती है। उनके पीछे कितनी ही पुस्तकें गद्य में लिखी गईं, लेकिन उनकी भाषा को पुरानी होने का कलँक लग गया। गुलिस्ताँ जिसकी रचना आदि में हुई थी आज भी फ़ारसी भाषा का शृंगार समझी जाती है। उसकी भाषा पर समय का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा।

साहित्यसंसार में कविवर्ग में ऐसा बहुत कम देखने में आता है कि एक ही विषय पर गद्य और पद्य के दो ग्रन्थों में गद्य रचना अधिक श्रेष्ट हो। किन्तु सादी ने यही करदिखाया है। गुलिस्ताँ और बोस्ताँ दोनों में नीति का

विषय लिया गया है। लेकिन जो आदर और प्रचार गुलिस्ताँ का है वह बोस्ताँ का नहीं। बोस्ताँ के जोड़ की कई किताबें फ़ारसी भाषा में वर्तमान हैं। *मसनवी †सिकन्दरनामा और ‡शाहनामा यह तीनों ग्रन्थ उच्चकोटि के हैं और उनमें यद्यपि शब्दयोजना, काव्यसौन्दर्य्य, अलङ्कार, और वर्णनशक्ति बोस्ताँ से अधिक है तथापि उनकी सरलता, और उसकी गुप्त चुटकियाँ और युक्तियाँ उनमें नहीं हैं। लेकिन गुलिस्ताँ के जोड़ का कोई ग्रन्थ फ़ारसी भाषा में है ही नहीं। उसका विषय नया नहीं है। उसके बाद से नीति पर फ़ारसी में सैकड़ों ही किताबें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें जो कुछ चमत्कार है वह सादी की भाषालालित्य और वाक्यचातुरी है। उसमें बहुत सी कथायें और घटनायें स्वयं लेखक ने अनुभव की हैं इसलिए उनमें ऐसी सजीवता और प्रभावोत्पादकता का संचार हो गया है जो केवल अनुभव ही से हो सकता है। सादी पहले एक बहुत साधारण कथा छेड़ते हैं लेकिन अन्त में एक ऐसी चुटीली और मर्मभेदी बात कहदेते हैं कि जिससे सारी कथा अलङ्कृत हो जाती है। यूरूप के समालोचकों ने

---

*मौलाना जलालुद्दीन का महाकाव्य, भक्ति के विषय में।

†निज़ामी का काव्य, सिकन्दर बादशाह के चरित्र पर।

‡फ़िरदोसी का अपूर्व काव्य, ईरान देश के बादशाहों के विषय में, फ़ारसी का महाभारत है।

सादी की तुलना *'होरेस' से की है। अंग्रेज़ विद्वानों ने उन्हें एशिया के शेक्सपियर की पदवी दी है। इससे विदित होता है कि यूरूप में भी सादी का कितना आदर है। गुलिस्ताँ का लैटिन, फ़्रेञ्च, जर्मन, डच, अंग्रेज़ी, तुर्की आदि भाषाओं में एक नहीं कई अनुवाद हैं। भारतीय भाषाओं में उर्दू, गुजराती, बँगला में उसका अनुवाद हो चुका है। हिन्दी भाषा में भी महाशय मेहरचन्द दास का किया हुआ गुलिस्ताँ का गद्य-पद्यमय अनुवाद १८८८ में प्रकाशित हो चुका है। संसार में ऐसे थोड़े ही ग्रन्थ हैं जिनका इतना आदर हुआ हो।

---
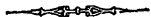
*होरेस यूनान का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

छठवाँ अध्याय

गुलिस्ताँ

यहाँ हम गुलिस्ताँ की कुछ कथायें देते हैं जिससे हम पाठकों को भी सादी के लेखनकौशल का परिचय देसकें।

[१] गुलिस्ताँ में आठ परिच्छेद हैं। प्रत्येक परिच्छेद में नीति और सदाचार के भिन्न भिन्न सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। प्रथम प्रकरण में बादशाहों को आचार, व्यवहार और राजनीति विषयक उपदेश दिये गये हैं।

सादी ने राजाओं के लिए निम्नलिखित बातें बहुत आवश्यक और ध्यान देने योग्य बतलाई हैं:—

(१) प्रजा पर कभी स्वयं अत्याचार करे न अपने कर्मचारियों को करने दे।

(२) किसी बात का अभिमान न करे और संसार के वैभव को नश्वर समझता रहे।

(३) प्रजा के धन को अपने भोग-विलास में न उड़ाकर उन्हीं के आराम में खर्च करे।

मैं दमिश्क़ में एक औलिया की क़ब्र पर बैठा हुआ था कि अरब देश का एक अत्याचारी बादशाह वहां पूजा करने आया। नमाज़ पढ़ने के पश्चात् वह मुझ से बोला कि मैं आजकल एक बलवान शत्रु के हाथों तंग आगया हूं। आप मेरे लिए दुआ कीजिये। मैंने कहा कि शत्रु के पंजे से बचने के लिए सब से अच्छा उपाय यह है कि अपनी दीन प्रजा पर दया कीजिये।

एक अत्याचारी बादशाह ने किसी साधु से पूछा कि मेरे लिए कौन सी उपासना उत्तम है। उत्तर मिला कि तुम्हारे लिए दोपहर तक सोना सब उपासनाओं से उत्तम है; जिस में उतनी देर तुम किसी को सता न सको।

एक दिन ख़लीफ़ा हारूं रशीद का एक शाहज़ादा क्रोध से भरा हुआ अपने पिता के पास आकर बोला कि मुझे अमुक सिपाही के लड़के ने गाली दी है। बादशाह ने मन्त्रियों से पूछा कि क्या होना चाहिए। किसी ने कहा

उसे क़ैद कर दीजिये। कोई बोला जान से मरवा डालिये। इस पर बादशाह ने शाहज़ादे से कहा, बेटा उत्तम तो यह है कि उसे क्षमा करो। यदि इतने उदार नहीं होसक्ते तो उसे भी गाली दे लो।

एक साधु संसार से विरक्त होकर वन में रहने लगा। एक दिन राजा की सवारी उधर से निकली। साधु ने कुछ ध्यान न दिया। तब मन्त्री ने जाकर उससे कहा साधु जी राजा तुम्हारे सामने से निकले और तुमने उनका कुछ सम्मान न किया। साधु ने कहा भगवन् राजा से कहिए कि नमस्कार-प्रणाम की आशा उससे रक्खें जो उन से कुछ चाहता हो। अथच राजा प्रजा की रक्षा के लिए है, न कि प्रजा राजा की बंदगी के लिए।

एक बार न्यायशील नौशेरवां जंगल में शिकार खेलने गया। वहां भोजन बनाने के लिए नमक की ज़रूरत हुई। नौकर को भेजा कि जाकर पासवाले गांव से नमक ले आ। लेकिन बिना दाम दिये मत लाना। नहीं गांव ही उजड़ जायगा। नौकर ने कहा तनिक सा नमक लेने से गांव कैसे उजड़ जायगा? नौशेरवां ने उत्तर दिया:—

अगर राजा प्रजा के बाग़ से एक सेब खाले तो नौकर लोग उस वृक्ष की जड़ तक खोद खाते हैं।

[२] दूसरे प्रकरण में सादी ने पाखण्डी साधुओं, मौलवियों और फ़क़ीरों को शिक्षा दी है। जिन्हें उस प्राचीन काल में भी इसकी कुछ कम आवश्यकता न थी। सादी को पण्डितों, मौलवी-मुल्लाओं के साथ रहने के बहुत अवसर मिले थे। अतएव वह उनके रंग-ढंग को भली भांति जानते थे। इन उपदेशों में बारम्बार समझाया है कि मौलवियों को सन्तोष रखना चाहिये। उन्हें राजा रईसों की खुशामद करने की ज़रूरत नहीं। गेरूवे बाने की आड़ में स्वार्थ सिद्ध करने को वह अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते थे। उनके कथनानुसार किसी बने हुए साधु से भोग-विलास में फँसा हुआ मनुष्य अच्छा है क्योंकि वह किसी को धोखा तो देना नहीं चाहता।

मुझे याद है कि एक बार जब मैं बाल्यावस्था में सारी रात कुरान पढ़ता रहा तो कई आदमी मेरे पास पड़े खर्राटे ले रहे थे। मैंने अपने पूज्य पिता से कहा इन सोने वालों को देखिये, निमाज़ पढ़ना तो दूर रहा कोई सिर भी नहीं उठाता। पिता जी ने उत्तर दिया, बेटा, तू भी सो जाता तो अच्छा होता कि इस छिद्रान्वेषण से तो बच जाता।

किसी बादशाह ने एक ईश्वर-भक्त से पूछा कि कभी आप मुझे भी तो याद करते होंगे। भक्त ने कहा, हां, जब ईश्वर को भूल जाता हूं तो आप याद आ जाते हैं।

एक बादशाह ने किसी विपत्ति के अवसर पर निश्चय किया कि यदि यह विपत्ति टल जाय तो इतना धन साधु सन्तों को दान कर दूंगा। जब उसकी कामना पूरी हो गई तो उसने अपने नौकर को रुपयों की एक थैली साधुओं को बाँटने के लिए दी। वह नौकर चतुर था। संध्या को वह थैली ज्यों की त्यों दर्बार में वापस ले आया और बोला, दीन बन्धु, मैंने बहुत खोज की किन्तु इन रुपयों का लेने वाला कोई न मिला। बादशाह ने कहा तुम भी विचित्र आदमी हो, इसी शहर में चार सौ से अधिक साधु होंगे। नौकर ने विनय की कि भगवन् जो सन्त हैं वह तो द्रव्य को छूते नहीं और जो माया सक्त हैं उन्हें मैं ने दिया नहीं।

किसी महात्मा से पूछा गया कि दान ग्रहण करना आप उचित समझते हैं वा अनुचित? उन्हों ने उत्तर दिया कि यदि उस से किसी सत्कार्य की पूर्त्ति हो तब तो उचित है, यदि केवल संग्रह और व्यापार के निमित्त हो तो अत्यन्त अनुचित है।

एक साधु किसी राजा का अतिथि हुआ। जब भोजन का समय आया तो उस ने बहुत अल्प भोजन किया। लेकिन जब नमाज़ का वक्त आया तो उसने खूब लंबी नमाज़ पढ़ी। जिस में राजा के मन में श्रद्धा उत्पन्न हो। वहाँ से विदा हो कर घर पर आये तो भूख के मारे बुरा हाल था। आते ही भोजन माँगा। पुत्र ने कहा पिता जी क्या राजा ने भोजन नहीं दिया। बोले भोजन तो दिया किन्तु मैं ने स्वयं जान बूझ कर कुछ नहीं खाया जिस में बादशाह को मेरे योगसाधन पर पूरा विश्वास हो जाय। बेटे ने कहा, तो भोजन करके नमाज़ भी फिर से पढ़िये। जिस तरह वहाँ का भोजन आप का पेट नहीं भर सका, वैसे ही वहाँ की नमाज़ भी सिद्ध नहीं हुई।

[३] तीसरे प्रकरण में सन्तोष की महिमा वर्णन की गई है। सादी की नीति शिक्षा में सन्तोष का पद बहुत ऊँचा है। और यथार्थ भी यही है। सन्तोष सदाचार का मूल मन्त्र है। सन्तोषरूपी नौका पर बैठ कर हम इस भवसागर को निर्विघ्न पार कर सक्ते हैं।

मिश्र देश में एक धनवान मनुष्य के दो पुत्र थे। एक ने विद्या पढ़ी, दूसरे ने धन संचय किया। एक पण्डित हुवा, और दूसरा मिश्र का प्रधान मन्त्री कोषाध्यक्ष। इस ने अपने विद्वान् भ्राता से कहा, देखो मैं राजपद पर पहुंचा

और तुम ज्यों के त्यों रह गये। उसने उत्तर दिया ईश्वर ने मुझ पर विशेष कृपा की है, क्योंकि मुझ को विद्या दी जो देव दुर्लभ पदार्थ है और तुम को मिश्र की उस गद्दी का मन्त्री बनाया जो *फिरऊन की थी।

ईरान के बादशाह बहमन के सँबन्ध में कहा जाता है कि उसने अरब के एक हकीम से पूछा कि नित्य कितना भोजन करना चाहिये। हकीम ने उत्तर दिया, २६ तोले। बादशाह बोला भला, इतने से क्या होगा। उत्तर मिला, इतने आहार से तुम ज़िन्दा रह सकते हो। इसके उपरान्त जो कुछ खाते हो वह बोझ है जो तुम व्यर्थ अपने ऊपर लादते हो।

एक मनुष्य पर किसी बनिये के कुछ रुपये चढ़ गये थे। वह उससे प्रतिदिन माँगा करता और कड़ी कड़ी बातें कहता। बेचारा सुन सुन कर दुःखी होता था, सहने के सिवा कोई दूसरा उपाय न था। एक चतुर ने यह कौतुक देख कर कहा इच्छाओं का टालना इतना कठिन नहीं है जितना बनियों को। क़साइयों के तगादे सहने की अपेक्षा माँस की अभिलाषा में मरजाना कहीं अच्छा है।

---

*मिश्र का एक अभिमानी बादशाह था जिसे मूसा नबी ने नील नदी में डुबा दिया।

एक फ़कीर को कोई काम आ पड़ा। लोगों ने कहा अमुक पुरुष वड़ा दयालु है। यदि उससे जा कर अपनी आवश्यकता कहो तो वह तुम्हें कदापि निराश न करेगा। फ़कीर पूछते पूछते उस पुरुष के घर पहुंचा। देखा तो वह रोनी सूरत बनाये, क्रोध में भरा वैठा है। उल्टे पाँव लौट आया। लोगों ने पूछा क्यों भाई क्या हुआ? वोले सूरत ही देखकर मन भर गया। यदि माँगना ही पड़े तो किसी प्रसन्न चित्त आदमी से मांगो, मनहूस आदमी से न मागना ही अच्छा है। सूरत ही निराशा-जनक न हो।

लोगों ने *हातिमताई से पूछा, क्या तुमने संसार में कोई अपने से अधिक प्रतिभाशाली मनुष्य देखा वा सुना है? बोला, हां एक दिन मैंने लोगों की वड़ी भारी दावत की। संयोग से उस दिन किसी कार्य्यवश मुझे जंगल की तरफ जाना पड़ा। एक लकड़हारे को देखा बोझ लिये आ रहा है। उससे पूछा, भाई, हातिम के महमान क्यों नहीं वन जाते? आज देश भर के आदमी उसके अतिथि हैं। बोला जो अपनी मेहनत की रोटी खाता है वह हातिम के सामने हाथ क्यों फैलावे?

---

*उदारता में अरब का हरिश्चन्द्र है।

कहते हैं कि एक भिक्षुक ने बहुतसा धन जमा कर रक्खा था। वहां के बादशाह ने उसे बुला कर कहा, सुना है कि तुम्हारे पास बड़ी सम्पत्ति है। मुझे आजकल द्रव्य की बड़ी आवश्यकता आपड़ी है। यदि उसमें से कुछ दे दो तो कोष में रुपये आतेही मैं तुम्हें चुका दूंगा। फ़क़ीर ने कहा जहां-पनाह, मुझ जैसे भिखारी का धन आप के काम का नहीं है क्योंकि मैंने मांग मांग कर कौड़ी कौड़ी बटोरी है। बादशाह ने कहा इसकी कुछ चिन्ता नहीं, मैं यह रुपये काफ़िरों, अधर्मियों कोही दूंगा। जैसा धन है वैसा।

एक वृद्ध पुरुष ने एक युवती कन्या से विवाह किया अपने कमरे को फूलों से खूब सजाया। उसके साथ एकान्त में बैठा हुआ उसकी सुन्दरता का आनंद उठाया करता। रात भर जागता रहता और रोचक कहानियां कहा करता कि कदाचित् उसके हृदय में कुछ प्रेम उत्पन्न हो जाय। एक दिन उससे बोला तेरा नसीब अच्छा था कि तेरा विवाह मेरे जैसे बूढ़े से हुआ जिसने बहुत ज़माना देखा है, सुख-दुःख का बहुत अनुभव कर चुका है। जो मित्रधर्म का पालन करना जानता है, और जो मृदुभाषी, प्रसन्न चिन्त, और शीलवान है। नहीं तू किसी अभिमानी युवक के पाले पड़ी होती, जो रात दिन सैर सपाटे किया करता, अपने ही बनाव सिंगार में भूला रहता, नित्य नये प्रेम की खोज में रहता, तो तुझसे रोते न बनता। युवक लोग सुन्दर और रसिक होते हैं

किन्तु प्रीति-पालन करना नहीं जानते। बूढ़े ने समझा कि इस भाषण ने कामिनी को मोहित कर लिया लेकिन अकस्मात युवती ने एक गहरी साँस ली और बोली "आपने बहुत अच्छी अच्छी बातें कहीं लेकिन उनमें से एक भी मुझे इतनी नहीं जचती जितनी मेरी दाई का यह वाक्य कि युवती को तीर का घाव उतना दुखदाई नहीं होता जितनावृद्ध मनुष्य का सरवास।"

दयारेबक में मैं एक वृद्ध धनवान मनुष्य का अतिथि था। उसके एक रूपवान पुत्र था। एक दिन उसने कहा "इस लड़के के सिवा मेरे और कोई सन्तान नहीं हुई। यहां से पासही एक पवित्र वृक्ष है, लोग वहां जाकर मन्नतें मानते हैं। कितनी ही रातें मैंने उस वृक्ष के नीचे ईश्वर से विनती की, तव मुझे यह पुत्र प्राप्त हुआ।" उधर लड़का धीरे धीरे मित्रों से कह रहा था "यदि मुझे उस वृक्ष का पता होता तो जा कर ईश्वर से पिता की मृत्यु के लिए विनय करता।"

मेरे मित्रों में एक युवक वड़ा प्रसन्न-चित्त, हंस-मुख और रसिक था। शोक उसके हृदय में घुसने भी न पाता था। कुछ दिनों तक उस से मिलने का संयोग न हुआ इसके बाद जब भेंट हुई तो देखा कि उसके घर में स्त्री और बच्चे हैं। साथही न वह पहले की सी मनोरञ्जकता है

न उत्साह। पूछा क्या हाल है? बोला, जब बच्चों का बाप हो गया तो बच्चों का खिलाड़ीपन कहां से लाऊं? अवस्थानुकूल ही सब बातें शोभा देती हैं।

एक बार युवावस्था में मैंने अपनी माता से कुछ कठोर बातें कह दीं। माता दुःखी होकर एक कोने में जा बैठी और रो कर कहने लगी, बचपन भूल गया, इसी लिये अब मुंह से ऐसी बातें निकलती हैं।

एक बूढ़े से लोगों ने पूछा विवाह क्यों नहीं करते? वह बोला वृद्धा स्त्रियों से मैं विवाह नहीं करना चाहता लोगों ने कहा, तो किसी युवती से ब्याह करलो। बोला, जब मैं बूढ़ा हो कर बूढ़ी स्त्रियों से भागता हूं तो वह युवती हो कर बूढ़े मनुष्य को कैसे चाहेंगी?

---

[४] चौथा प्रकरण बहुत छोटा है और उसमें मितभाषी होने का जो उपदेश किया गया है उसकी सभी बातों से आजकल के शिक्षित लोग सहमत न होंगे, जिनका सिद्धान्त ही है कि अपनी राई भर बुद्धि को पर्वत बनाकर दिखाया जाय। आजकल विनय अयोग्यता की द्योतक समझी जाती है और वही मनुष्य चलते-पुरज़े और

में युवावस्था दूसरे में वृद्धावस्था का। युवावस्था में हमारी मनोवृत्तियां कैसी होती हैं, हमारे क्या कर्तव्य होते हैं, हम वासनाओं में किस प्रकार लिप्त हो जाते हैं बुढ़ापे में हमें क्या अनुभव होते हैं, मन में क्या अभिलाषायें रहती हैं हमारे क्या कर्तव्य होने चाहियें। इन सब विषयों को सादी ने इस तरह वर्णन किया है मानों वह भी सदाचार के अङ्ग हैं। इस में कितनी ही कथायें ऐसी हैं कि जिनसे मनोरञ्जन के सिवा कोई नतीजा नहीं निकलता, वरन कुछ कथायें ऐसी भी हैं जिन को गुलिस्ताँ जैसे ग्रन्थ में स्थान न मिलना चाहिये था। विशेषतः युवावस्था का वर्णन करते हुए तो ऐसा मालूम होता है मानो सादी को जवानी का नशा चढ़ गया था।

---

[७] सातवां प्रकरण शिक्षा से सम्बन्ध रखता है। सादी को शिक्षकों के दोष और गुण, शिष्य और गुरु के पारस्परिक व्यवहार और शिक्षा के फल और विफल का अच्छा वर्णन किया है। उनका सिद्धान्त था कि शिक्षा चाहे कितनी ही उत्तम हो मानव स्वभाव को नहीं बदल सकती, और शिक्षक चाहे कितना ही विद्वान् और सच्चरित्र क्यों न हो कठोरता के बिना अपने कार्य्य में सफल नहीं हो सक्ता। यद्यपि आजकल यह सिद्धान्त निर्भ्रान्त नहीं माने जा सकते तथापि यह नहीं कहा जा सक्ता कि उनमें कुछ भी तत्व नहीं है। कोई शिक्षा

पद्धति अबतक ऐसी नहीं निकली है जो दण्ड का निषेध करती हो, हां कोई शारीरिक दण्ड के पक्ष में है, कोई मानसिक दण्ड के पक्ष में।

एक विद्वान् किसी बादशाह के लड़के को पढ़ाता था। वह उसे बहुत मारता और डांटता था। राजपुत्र ने एक दिन अपने पिता से जा कर अध्यापक की शिकायत की। बादशाह को भी क्रोध आया। अध्यापक को बुलाकर पूछा "आप मेरे लड़के को इतना क्यों मारते हैं? इतनी निर्दयता आप अन्य लड़कों के साथ नहीं करते?" अध्यापक ने उत्तर दिया "महाराज, राजपुत्र में नम्रता और सदाचार की विशेष आवश्यकता है क्योंकि बादशाह लोग जो कुछ कहते या करते हैं वह प्रत्येक मनुष्य की जिह्वा पर रहता है जिसे बचपन में सत्चरित्रता की शिक्षा नहीं कठोर पूर्वता मिलती उसमें बड़े होने पर कोई अच्छा गुण नहीं आ सकता। हरी लकड़ी को जितना चाहो मोड़ लो लेकिन सूख जाने पर वह नहीं मुड़ सकती।"

मैंने अफ्रीक़ा देश में एक मौलवी को देखा। वह अत्यन्त कुरूप कठोर, और कटुभाषी था। लड़कों को पढ़ाता कम, और मारता ज़्यादा। लोगों ने उसे निकाल

कर उसकी जगह एक धार्मिक, नम्र, और सहनशील मौलवी को रक्खा। यह हज़रत लड़कों से बहुत प्रेम से बोलते और कभी उनकी तरफ़ कड़ी आंख से भी न देखते। लड़के उनका यह स्वभाव देख कर ढीठ होगये। आपस में लड़ाई दंगा मचाते और लिखने की तख़्तियां लड़ाया करते। जब मैं दूसरी वार फिर वहां गया तो मैंने देखा कि वही पहले वाला मौलवी बालकों को पढ़ा रहा है। पूछने पर विदित हुआ कि दूसरे मौलवी की नम्रता से उकता जाने पर लोग पहले मौलवी को मना कर लाये थे।

एक वार मैं बलख़ से कुछ यात्रियों के साथ आ रहा था। हमारे साथ एक बहुत बलवान नवयुवक था जो डींग मारता चला आता था कि मैंने यह किया और वह किया। निदान हम को कई डाकुओं ने घेर लिया। मैंने पहलवान से कहा अब क्या खड़े हो कुछ अपना पराक्रम दिखाओ। लेकिन लुटेरों को देखते ही उस मनुष्य के होश उड़ गये। मुख फीका पड़ गया। तीर कमान हाथ से छूट कर गिर पड़ा और वह थर थर कांपने लगा। जब उसकी यह दशा देखी तो अपने असबाब वहीं छोड़ कर हम लोग भाग खड़े हुए। यों किसी तरह प्राण बचे।

जिसे युद्ध का अनुभव हो वही समर में अड़ सक्ता है। इस के लिये बल से अधिक साहस की ज़रूरत है।

[८] आठवें प्रकरण में सादी ने सदाचार और सद्व्यवहार के नियम लिखे हैं। कथाओं का आश्रय न लेकर खुले खुले उपदेश किये हैं। इस लिये सामान्य रीति से यह अध्याय विशेष रोचक न हो सक्ता था, किन्तु इस कमी को सादी ने रचना सौन्दर्य्य से पूरा किया है। छोटे छोटे वाक्यों में सूत्रों की भांति अर्थ भरा हुआ है। यह प्रकरण मानों सादी के उपदेशों का निचोड़ है। यह वह उपवन है जिसमें राजनीति, सदाचार, मनोविज्ञान, समाजनीति, सभाचातुरी में रङ्ग-बिरङ्गे पुष्प लहलहा रहे हैं। इन फूलों में छिपे हुए कांटे भी हैं, जिन में यह अद्भुत गुण है कि वह वहीं चुभते हैं जहां चुभना चाहिये — गेरुवे बाने की आड़ में, छिपी हुई स्वार्थान्धता में, उपाधियों के नीचे छिपी हुई मूर्खता में, उन हाथों में जो सलाम को उठते हैं, लेकिन दीनों के उठाने को नहीं उठते, उन हृदयों में, जहां सारे संसार की अभिलाषाओं के लिए स्थान है किन्तु प्रेम और दया के लिए नहीं। संसार में कुछ ऐसे उपदेशक होते हैं जो धन को अत्याचार का यंत्र और धनी को समाज का शत्रु समझते हैं। उनमें एक प्रकार की ईर्षा होती है जो सुख और सम्पत्ति को देख-कर तृणवत् जल उठती है। ऐसे उपदेशकों को cynic परछिद्रान्वेषी कहते हैं। सादी cynic नहीं है। वह ईर्षालु हृदय से उपदेश नहीं करता। उसका हृदय शीतल, कोमल और मधुर है। वह धन का भूका नहीं, लेकिन धन की निन्दा भी नहीं करता।

वह ऐश्वर्य्य का अभिलाषी नहीं लेकिन उसका निरादर भी नहीं करता है। उसमें बड़ा प्रशंसनीय गुण यह है कि वह अपने उपदेशों में आदर्श के साथ साथ व्यवहारिक दृष्टि भी रखता है।

धन जीवन के सुख के लिए है; किन्तु जीवन धन संग्रह करने के लिए नहीं है। मैं ने एक बुद्धिमान से पूछा, "संसार में भाग्यवान कौन है, और कौन भाग्यहीन ?" बोला " जिसने भोगा और यश कमाया वह भाग्यवान है, किन्तु जिसने धन कमाया और छोड़ कर मर गया वह भाग्यहीन है।"

उन दो मनुष्यों ने वृथा कष्ट उठाया और वृथा परिश्रम किया। एक तो वह जिसने धन संग्रह किया और उसे भोगा नहीं, दूसरा वह जिसने विद्या पढ़ी किन्तु उसका उपयोग न किया।

दुष्टों पर दया करना, सज्जनों पर अत्याचार है।

नृपतियों की मित्रता और बालकों की मीठी मीठी बातों पर भरोसा नहीं करना चाहिये।

यदि कोई निर्बल शत्रु तुम्हारे साथ मित्रता करे तो तुम को उससे अधिक सचेत रहना चाहिये। जब मित्र की सच्चाई का ही भरोसा नहीं तो शत्रुओं की खुशामद का क्या विश्वास !

———

यदि किन्हीं दो दुश्मनों के बीच में कोई बात कहो तो उस भांति कहो कि अगर वे फिर मित्र हो जायँ तो तुम्हें लज्जित न होना पड़े।

———

जो मनुष्य अपने मित्र के शत्रुओं से मित्रता करता है वह अपने मित्र का शत्रु है।

———

जब तक धन से काम निकले तब तक जान को जोखिम में न डालो। जब कोई उपाय न रहे तो म्यान से तलवार खींचो।

———

शत्रु की सलाह के विरुद्ध काम करना ही बुद्धिमानी है। अगर वह तुम्हें तीर के समान सीधी राह दिखावे तो भी उसे छोड़ दो और टेढ़ी राह जाओ।

———

न तो इतनी कड़ाई करो कि लोग तुम से डरने लगें, और न इतनी नम्रता कि लोग सिर चढ़ें।

दो मनुष्य राज्य और धर्म के शत्रु हैं, निर्दयी राजा और मूर्ख साधु।

राजा को उचित है कि अपने शत्रुओं पर इतना क्रोध न करे कि जिससे मित्रों के मन में भी खटका हो जाय।

जब शत्रु की कोई चाल काम नहीं करती तब वह मित्रता उत्पन्न करता है; मित्रता के बहाने से वह उन सब कामों को कर सक्ता जो वह दुश्मन रह कर न कर सक्ता।

साँप के सिर को अपने वैरी के हाथ से कुचलवाओ। या तो साँप ही मरेगा या दुश्मन ही से गला छूटेगा।

जब तक तुम्हें पूर्ण विश्वास न हो कि तुम्हारी बात पसन्द आवेगी तब तक बादशाह के सामने किसी की निन्दा मत करो; अन्यथा तुम्हें स्वयं हानि उठानी पड़ेगी।

जो व्यक्ति किसी घमण्डी आदमी को उपदेश करता है, वह ख़ुद नसीहत का मुहताज है।

जो मनुष्य सामर्थ्यवान् हो कर भी भलाई नहीं करता उसे सामर्थ्यहीन होने पर दुःख भोगना पड़ेगा। अत्याचारी का विपद में कोई साथी नहीं होता।

किसी के छिपे हुए ऐब मत खोलो; इससे तुम्हारा भी विश्वास उठजायगा।

विद्या पढ़कर उसका अनुशीलन न करना, ज़मीन जोत कर बीज न डालने के समान है।

जिसकी भुजाओं में बल नहीं है, यदि वह लोहे

की कलाई वाले से पंजा ले तो यह उसकी मूर्खता है

दुर्जन लोग सज्जनों को उसी तरह नहीं देख सक्ते जिस तरह बाज़ारी कुत्ते शिकारी कुत्तों को देखकर दूर से गुर्राते हैं, लेकिन पास जाने की हिम्मत नहीं करते।

गुणहीन गुणवानों से द्वेष करते हैं।

बुद्धिमान लोग पहला भोजन पच जाने पर फिर खाते हैं; योगी लोग उतना खाते हैं जितने से जीवित रहें, जवान लोग पेट भर खाते हैं, बूढ़े जबतक पसीना न आजाय खाते ही रहते हैं, किन्तु क़लन्दर इतना खा जाते हैं कि सांस की भी जगह नहीं रहती।

अगर पत्थर हाथ में हो और साँप नीचे तो उस समय सोच विचार नहीं करना चाहिये।

अगर कोई बुद्धिमान मूर्खों के साथ वादविवाद करे तो उसे प्रतिष्ठा की आशा न रखनी चाहिये।

जिस मित्र को तुम ने बहुत दिनों में पाया है उससे मित्रता निभाने का यत्न करो।

विवेक इन्द्रियों के अधीन है जैसे कोई सीधा मनुष्य किसी चंचल स्त्री के अधीन हो।

बुद्धि, बिना बल के छल और कपट है, बल बिना बुद्धि के मूर्खता और क्रूरता है।

जो व्यक्ति लोगों का प्रशंसापात्र बनने की इच्छा से वासनाओं का त्याग करता है, वह हलाल को छोड़कर हराम की ओर झुकता है।

दो बातें असम्भव हैं, एक तो अपने अंश से अधिक खाना, दूसरे मृत्यु से पहले मरना।
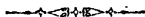
बोस्तां

फ़ारसी साहित्य की पाठ्य पुस्तकों में गुलिस्तां के बाद बोस्तां ही का प्रचार है। यह कहने में कुछ अत्युक्ति न होगी कि काव्यग्रन्थों में बोस्तां का वही आदर है जो गद्य में गुलिस्तां का है। निज़ामी का सिकन्दर-नामा, फ़िरदौसी का शाहनामा, मौलाना रूम की मसनवी, और दीवान-हाफ़िज़, यह चारों ग्रन्थ बोस्तां ही के समान गिने जाते हैं। निज़ामी और फ़िरदौसी वीर-रस में अद्वितीय हैं। मौलाना रूम की मसनवी भक्ति सम्बन्धी ग्रन्थों में अपना जवाब नहीं रखती, और हाफ़िज़ प्रेम-रस के राजा हैं। इन चारों काव्यों का आदर किसी न किसी अंश में उनके विषय पर निर्भर है। लेकिन बोस्तां एक नीति-ग्रन्थ है और नीति के ग्रन्थ बहुधा जनता को प्रिय नहीं हुआ करते। अतएव बोस्तां का जो आदर और प्रचार है वह सर्वथा उसकी सरलता और विचारोत्कर्ष पर निर्भर है। मौलाना रूम ने जीवन के गूढ़ तत्वों का वर्णन किया है और धार्मिक विचार के मनुष्यों में उसका बड़ा मान है। भाषा की मधुरता, और प्रेम के भाव में हाफ़िज़ सादी से बहुत बढ़ा हुआ है। उसकी सी मर्मस्पर्शिनी कविता फ़ारसी में और किसी ने नहीं की। उसके ग़ज़लों के कितने ही शेर जीवन की साधारण बातों पर ऐसे घटते हैं मानों

उसी अवसर के लिए लिखे गये हों। धन्य है शीराज़ की वह पवित्र भूमि जिसने सादी और हाफ़िज़ जैसे दो ऐसे अमूल्य रत्न उत्पन्न किये। भाषा और भाव की सरलता में सादी सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। फ़िरदौसी और निज़ामी बहुधा अलौकिक बातों का वर्णन करते हैं: पर सादी ने कहीं अलौकिक घटनाओं का सहारा नहीं लिया है। यहांतक कि उसकी अत्युक्तियां भी अस्वाभाविक नहीं होतीं। उन्हों ने समयानुसार सभी रसों का वर्णन किया है लेकिन करुणा-रस उन में सर्वप्रधान है। दया के वर्णन में उनकी लेखनी बहुत ही करुण हो गई है। सादी निमाज़ और रोज़े के पाबन्द तो थे किन्तु सेवाधर्म को उस से भी श्रेष्ठ समझते थे। उन्हों ने बारम्बार सेवा पर ज़ोर दिया है। उनका दूसरा प्रिय विषय राजनीति है। बादशाहों को न्याय, धर्म, दीनपालन और क्षमा का उपदेश करने से वह कभी नहीं थकते। उनकी राजनीति पर लायलटी (राजभक्ति) का ऐसा रंग नहीं चढ़ा था कि वह खरी खरी बातों के कहने से चूक जायं। उनके राजनीति विषयक विचारों की स्वतन्त्रता पर आज भी आश्चर्य होता है। इस बीसवीं शताब्दि में भी हमारे यहां बेगार की प्रथा क़ायम है। लेकिन आज के कई सौ वर्ष पहले अपने ग्रन्थों में सादी ने कई जगह इसका विरोध किया है।

बोस्तां में १० अध्याय हैं उनकी विषय सूची देखने

से विदित होता है कि सादी की नीतिशिक्षा कितनी विस्तीर्ण है —

प्रथम अध्याय	... ...	न्याय और राजनीति
द्वितीय ,,	... ...	दया
तृतीय ,,	... ...	प्रेम
चतुर्थ ,,	... ...	विनय
पञ्चम ,,	... ...	धैर्य्य
षष्ठ ,,	... ...	सन्तोष
सप्तम ,,	... ...	शिक्षा
अष्टम ,,	... ...	कृतज्ञता
नवम ,,	... ...	प्रायश्चित्त
दशम ,,	... ...	ईश्वर प्रार्थना

नीतिग्रन्थों की आवश्यकता यों तो जन्म भर रहती है लेकिन पढ़ने का सब से उपयुक्त समय बाल्यावस्था है। उस समय उनके मानवचरित्र का आरंभ होता है। इसी लिए पाठ्यपुस्तकों में बोस्तां का इतना प्रचार है। संसार की कई प्रसिद्ध भाषाओं में इसके अनुवाद हो चुके हैं। सर्वसाधारण में इस के जितने शेर लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हैं उतने गुलिस्तां के नहीं। यहां हम उदाहरण की भांति दो चार कथायें देकर ही सन्तोष करेंगे —

(१) सीरिया देश के एक बादशाह जिसका नाम

"सालेह" था कभी कभी अपने एक गुलाम के साथ भेष बदल कर बाज़ारों में निकला करता था। एक बार उसे एक मस्जिद में दो फ़क़ीर मिले। उन में से एक दूसरे से कहता कि अगर यह बादशाह लोग जो भोग-विलास में जीवन व्यतीत करते हैं स्वर्ग में आवेंगे तो मैं उनकी तरफ़ आंख उठाकर भी न देखूंगा। स्वर्ग पर हमारा अधिकार है क्योंकि हम इस लोक में दुःख भोग रहे हैं। अगर सालेह वहां बाग़ की दीवार के पास भी आया तो जूते से उसका भेजा निकाल लूंगा। सालेह यह बातें सुन कर वहां से चला आया। प्रातःकाल उस ने दोनों फ़क़ीरों को बुलाया और यथोचित आदर सत्कार करके उच्चासन पर बैठाया। उन्हें बहुत सा धन दिया। तब उन में से एक फ़क़ीर ने कहा हे बादशाह, तू हमारी किस बात से ऐसा प्रसन्न हुआ? बादशाह हर्ष से गद्गद् होकर बोला मैं वह मनुष्य नहीं हूं कि ऐश्वर्य्य के अभिमान में दुर्बलों को भूल जाऊं। तुम मेरी ओर से अपना हृदय साफ़ कर लो और स्वर्ग में मुझे ठोकर मारने का विचार मत करो। मैंने आज तुम्हारा सत्कार किया है, तुम कल मेरे सामने स्वर्ग का द्वार न बन्द करना।

(२) सुना है कि ईरान देश का बादशाह दारा एक दिन शिकार खेलने गया और अपने साथियों से छूट गया। कहीं खड़ा इधर उधर ताक रहा था कि एक चरवाहा दौड़ता हुआ उसके सामने आया। बादशाह ने

इस भय से कि यह कोई शत्रु न हो तुरंत धनुष चढ़ाया। चरवाहे ने चिल्ला कर कहा "हे महाराज, मैं आपका वैरी नहीं हूं। मुझे मारने का विचार मत कीजिये। मैं आपके घोड़ों को इसी चरागाह में चराने लाया करताहूं।" तब बादशाह को धीरज हुआ। बोला "तू बड़ा भाग्यवान था कि आज मरते मरते बच गया"। चरवाहा हंस कर बोला "महाराज, यह बड़े खेद की बात है कि राजा अपने मित्रों और शत्रुओं को न पहचान सके। मैं हज़ारों बार आपके सामने गया हूं। आपने घोड़े के सम्बन्ध में मुझ से बातें की हैं। आज आप मुझे ऐसा भूल गये। मैं तो अपने घोड़ों को लाखों घोड़ों में पहचान सकता हूं। आपको आदमियों की पहचान होना चाहिए।"

(३) बादशाह "उमर" के पास एक ऐसी बहुमूल्य अंगूठी थी कि बड़े बड़े जौहरी उसे देख कर दंग रह जाते। उसका नगीना रात को तारे की तरह चमकता था। संयोग से एक बार देश में अकाल पड़ा। बादशाह ने अंगूठी बेच दी और उससे एक सप्ताह तक अपनी भूखी प्रजा का उदर पालन किया। बेचने के पहले बादशाह के शुभचिन्तकों ने उसे बहुत समझाया कि ऐसी अपूर्व अंगूठी मत बेचिये, फिर न मिलेगी। उमर ने न माना। बोला "जिस राजा की प्रजा दुःख में हो उसे यह अंगूठी शोभा नहीं देती। रत्नजटित आभूषणों

को ऐसी दशा में पहिनना कब उचित कहा जा सकता है कि जब मेरी प्रजा दाने को तरसती हो।"

(४) दमिश्क़ में एक बार ऐसा अकाल पड़ा कि बड़ी बड़ी नदियां और नाले सूख गये, और पानी का कहीं नाम न रहा। कहीं था तो अनाथों की आंखों में। यदि किसी घर से धुआं उठता था तो वह चूल्हे का नहीं किसी विधवा, दीना की आह का धुआं था। उस समय मैं ने अपने एक धनवान मित्र को देखा, जो उदासीन, सूख कर कांटा हो गया था। मैंने कहा, भाई तुम्हारी यह क्या दशा हो रही है, तुम्हारे घर में किस बात की कमी है? यह सुनते ही उसके नेत्र सजल हो गये। बोला, मेरी यह दशा अपने दुःख से नहीं, वरन दूसरों के दुःख से हुई है। अनाथों को क्षुधा से विलखते देखकर मेरा हृदय फटा जाता है। वह मनुष्य पशु से भी नीच है जो अपने देशवासियों के दुःख से व्यथित न हो।

(५) एक दुष्ट सिपाही किसी कुंए में गिर पड़ा। सारी रात पड़ा रोता चिल्लाता रहा। कोई सहायक न हुआ। एक आदमी ने उलटे यह निर्दयता की कि उस के सिर पर एक पत्थर मार कर बोला कि दुरात्मा, तूने भी कभी किसी के साथ नेकी की है आज दूसरों से सहायता की आशा रखता है। जब हज़ारों हृदय तेरे अन्याय से तड़प रहे हैं, तो तेरे घावों की सुधि कौन लेगा। कांटे बो कर फूल की आशा मत रख।

(६) एक अत्याचारी राजा देहातियों के गधे बेगार में पकड़ लिया करता था। एक बार वह शिकार खेलने गया और एक हिरन के पीछे घोड़ा दौड़ाता हुआ अपने आदमियों से बहुत आगे निकल गया। यहांतक कि संध्या हो गई। इधर उधर अपने साथियों को देखने लगा। लेकिन कोई देख न पड़ा। विवश होकर निकट के एक गांव में रात काटने की ठानी। वहां क्या देखता है कि एक देहाती अपने मोटे ताज़े गधे को डंडों से मार मार कर उसके धुर्रे उड़ा रहा है। राजा को उसकी यह कठोरता बुरी मालूम हुई। बोला, अरे भाई क्या तू इस दीन पशु को मार ही डालेगा? तेरी निर्दयता पराकाष्ठा को पहुंचगई। यदि ईश्वर ने तुझे बल दिया है तो उसका ऐसा दुरुपयोग मत कर। देहाती ने बिगड़ कर कहा तुम से क्या मतलब है? मैं जाने क्या समझ कर इसे मारता हूं। राजा ने कहा, अच्छा बहुत बक-बक मत कर, तेरी बुद्धि भ्रष्ट होगई है, शराब तो नहीं पी ली? देहाती ने गम्भीरभाव से कहा मैंने न शराब पी है, न पागल हूं, मैं इसे केवल इसी लिये मारता हूं जिस में यह इस देश के अत्याचारी राजा के किसी काम का न रहे। लंगड़ा और बीमार होकर मेरे द्वार पर पड़ा रहे, यह मुझे स्वीकार है। लेकिन राजा को बेगार में देना स्वीकार नहीं। राजा यह उत्तर सुनकर चुप रहगया। रात तारे गिन-गिन कर काटी। प्रातःकाल उसके आदमी खोजते हुए वहां आ पहुंचे

जब खा पी कर निश्चिन्त हुआ तो राजा को उस गंवार की याद आई। उसे पकड़वा मंगाया और तलवार खींच कर उसका सिर काटने पर तैयार हुआ। देहाती जीवन से निराश होगया और निर्भय होकर बोला, हे राजा, तेरे अत्याचार से सारे देश में हाय हाय मची हुई है। कुछ मैं ही नहीं बल्कि तेरी समस्त प्रजा तेरे अन्याचार से घबड़ा उठी है। यदि तुझे मेरी बात कड़ी लगती है तो न्याय कर कि फिर ऐसी बातें सुनने में न आवें। इसका उपाय मेरा सिर काटना नहीं, बल्कि अत्याचार को छोड़ देना है। राजा के हृदय में ज्ञान उत्पन्न होगया। देहाती को क्षमा कर दिया और उस दिन से प्रजा पर अत्याचार करना छोड़ दिया।

(७) सुना है कि एक फ़क़ीर ने किसी बादशाह से उसके अन्याचारों की निन्दा की। बादशाह को यह बात बुरी लगी और उसे क़ैद कर दिया। फ़क़ीर के एक मित्र ने उससे कहा, तुम ने यह अच्छा नहीं किया। बादशाहों से ऐसी बातें नहीं कहनी चाहियें। फ़क़ीर बोला, मैं ने जो कुछ कहा वह सत्य है, इस क़ैद का क्या डर, दो चार दिन की बात है। बादशाह के कान में यह बात पहुंची। फ़क़ीर को कहला भेजा, इस भूल में न रहना कि दो चार दिन में छुट्टी हो जायगी, तुम उसी क़ैद में मरोगे। फ़क़ीर यह सुन कर बोला, जाकर बादशाह से कहदो कि मुझे यह धमकी न दें। यह

ज़िन्दगी दो चार दिन से ज़्यादा न रहेगी, मेरे लिए दुःख सुख दोनों बराबर हैं। तू ऊंचे आसन पर बैठा दे तो उसका खुशी नहीं, सिर काट डाल तो उसका कुछ रंज नहीं। मरने पर हम और तुम दोनों बराबर हो जायंगे। दयाहीन बादशाह यह सुनकर और भी बिगड़ा, और हुक्म दिया कि इसकी ज़बान तालू से खींच ली जाय। फ़क़ीर बोला मुझको इसका भी भय नहीं है। खुदा मेरे मन का हाल बिना कहे ही जानता है। तू अपने को रो जिस शुभ दिन को मरेगा देश में आनन्दोत्सव की तरंगें उठने लगेंगी।

(८) एक कवि किसी सज्जन के पास जाकर बोला कि मैं बड़ी विपत्ति में पड़ा हुआ हूं, एक नीच आदमी के मुझ पर दस रुपये आते हैं। इस ऋण के बोझ से मैं दबा जाता हूं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि वह मेरे द्वार का चक्कर न लगाता हो। उसकी बाण सरीखी बातों ने मेरे हृदय को चलनी बना दिया है। वह कौन सा दिन होगा कि मैं इस ऋण से मुक्त हो जाऊंगा। सज्जन पुरुष ने यह सुन कर उसे एक अशरफ़ी दी। कवि अति प्रसन्न हो कर चला गया। एक दूसरा मनुष्य वहां बैठा था। बोला, आप जानते हैं यह कौन है। यह ऐसा धूर्त है कि बड़े बड़े दुष्टों के भी कान काटता है। यह अगर मर भी जाय तो रोना न चाहिये। सज्जन ने उससे कहा चुप रह, किसी की निन्दा क्यों करता है। अगर उसके ऊपर वास्तव में ऋण है तब तो

उसका गला छूट गया। लेकिन यदि उसने मुझ से धूर्तता की है तब भी मुझे पछताने की ज़रूरत नहीं क्योंकि रुपये न पाता तो वह मेरी निन्दा करने लगता।

(६) मैंने सुना है कि हिजाज़ के रास्ते पर एक आदमी पग पग पर निमाज़ पढ़ता जाता था। इस सद्मार्ग में इतना लीन हो रहा था कि पैरों से कांटे भी न निकालता था। निदान उसे अभिमान हुआ कि ऐसी कठिन तपस्या दूसरा कौन कर सक्ता है। तब आकाशवाणी हुई कि भलेआदमी तू अपनी तपस्या का अभिमान मत कर। किसी मनुष्य पर दया करना पग पग पर नमाज़ पढ़ने से उत्तम है।

(१०) एक दीन मनुष्य किसी धनी के पास गया और कुछ मांगा। धनी मनुष्य उसे कुछ देता तो क्या, उलटे नौकर से धक्के दिलवाकर उसे बाहर निकलवा दिया। कुछ काल उपरान्त समय पलटा। धनी का धन नष्ट हो गया, सारा कारोबार बिगड़ गया। खाने तक का ठिकाना न रहा। उसका नौकर एक ऐसे सज्जन के हाथ पड़ा, जिसे किसी दीन को देख कर वही प्रसन्नता होती थी जो दरिद्र को धन से होती है। अन्य नौकर चाकर छोड़ भागे। इस दुरवस्था में बहुत दिन बीत गये। एक दिन रात को इस धर्मात्मा के द्वार पर किसी साधु ने आकर भोजन मांगा। उस ने नौकर से कहा उसे भोजन दे दो। नौकर जब भोजन देकर

लौटा तो उसके नेत्रों से आंसू बह रहे थे। स्वामीने पूछा, क्यों रोता है? बोला, इस साधु को देख कर मुझे बड़ा दुःख हुआ। किसी समय मैं उसका सेवक था। उसके पास धन, धरती सब था। आज उसकी यह दशा है कि भीख मांगता फिरता है। स्वामी सुन कर हंसा और कहा बेटा, संसार का यही रहस्य है। मैं भी वही दीन मनुष्य हूं जिसे इसने तुझ से धक्के देकर बाहर निकलवा दिया था।

(११) याद नहीं आता कि मुझ से किस ने यह कथा कही थी कि किसी समय यमन में एक बड़ा दानी राजा था। वह धन को तृणवत समझता था। जैसे मेघ से जल की वर्षा होती है उसी तरह उसके हाथों से धन की वर्षा होती थी। हातिम का नाम भी कोई उसके सामने लेता तो चिढ़ जाता। कहा करता कि उसके पास न राज्य है न ख़ज़ाना, उसकी और मेरी क्या बराबरी? एक बार उसने किसी आनन्दोत्सव में बहुत से मनुष्यों को निमन्त्रण किया। बात चीत में प्रसंगवश हातिम की भी चर्चा आ गई और दो चार मनुष्य उसकी प्रशंसा करने लगे। राजा के हृदय में ज्वाला सी दहक उठी। तुरंत एक आदमी को आज्ञा दी कि हातिम का सिर काट ला। वह आदमी हातिम की खोज में निकला। कई दिन के बाद रास्ते में उसकी एक युवक से भेंट हुई। वह गुण और शील में निपुण था। घातक को अपने

घर लेगया, और बड़ी उदारता से उसका आदर सम्मान किया। जब प्रातःकाल घातक ने विदा मांगी तो युवक ने अत्यन्त विनीतभाव से कहा कि यह आपही का घर है, इतनी जल्दी क्यों करते हैं। घातक ने उत्तर दिया कि मेरा जी तो बहुत चाहता है कि ठहरूं लेकिन एक कठिन कार्य्य करना है, उसमें विलम्ब हो जायगा। हातिम ने कहा यदि कोई हानि न हो तो मुझ से भी बतलाओ कौन सा काम है, मैं भी तुम्हारी सहायता करूं। मनुष्य ने कहा, यमन के बादशाह ने मुझे हातिम को वध करने भेजा है। मालूम नहीं, उनमें क्यों विरोध है। तू हातिम को जानता हो तो उसका पता बता दे। युवक निर्भीकता से बोला हातिम मैं ही हूं. तलवार निकाल और शीघ्र अपना काम पूरा कर। ऐसा न हो कि विलम्ब करने से तू कार्य्य सिद्ध न करसके। मेरे प्राण तेरे काम आवें तो इस से बढ़ कर मुझे और क्या आनन्द होगा। यह सुनते ही घातक के हाथ से तलवार छूट कर जमीन पर गिर पड़ी। वह हातिम के पैरों पर गिर पड़ा और बड़ी दीनता से बोला हातिम तू वास्तव में दानवीर है। तेरी जैसी प्रशंसा सुनता था उससे कहीं बढ़ कर पाया। मेरे हाथ टूट जायें अगर तुझ पर एक कंकरी भी फेंकूं। मैं तेरा दास हूं और सदैव रहूंगा। यह कह कर वह यमन लौट आया। बादशाह का मनोरथ पूरा न हुआ तो उसने उस मनुष्य का बहुत तिरस्कार किया, और बोला मालूम होता है

कि तू हातिम से डरकर भाग आया। अथवा तुझे उसका पता न मिला। उस मनुष्य ने उत्तर दिया, राजन् हातिम से मेरी भेंट हुई लेकिन मैं उसका शील और आत्मसमर्पण देख कर उसके वशीभूत हो गया। इसके पश्चात् उसने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। बादशाह सुनकर चकित हो गया और स्वयं हातिम की प्रशंसा करते हुए बोला, वास्तव में वह दानियों का राजा है, उसकी जैसी कीर्ति है वैसे ही उसमें गुण हैं।

(१२) बायज़ीद के विषय में कहा जाता है कि वह अतिथिपालन में बहुत उदार था। एक बार उसके यहां एक बूढ़ा आदमी आया जो भूख प्यास से बहुत दुखी मालूम होता था। बायज़ीद ने तुरंत उसके सामने भोजन मंगवाया। वृद्ध मनुष्य भोजन पर टूट पड़ा। उसकी जिह्वा से 'बिस्मिल्लाह' शब्द न निकला। बायज़ीद को निश्चय हो गया कि वह क़ाफिर है। उसे अपने घर से निकलवा दिया। उसी समय आकाश-वाणी हुई कि बायज़ीद मैंने इस क़ाफिर का १०० वर्ष तक पालन किया, और तुझ से एक दिन भी न करते बन पड़ा।

सादी की लोकोक्तियां

किसी लेखक की सर्वप्रियता इस बात से भी देखी जाती है कि उसके वाक्य और पद कहावतों के रूप में कहां तक प्रचलित हैं। मानवचरित्र, पारस्परिक व्यवहार, आदि के सम्बन्ध में जब लेखक की लेखनी से कोई ऐसा सारगर्भित वाक्य निकल जाता है जो सर्व-व्यापक हो तो वह लोगों की ज़बान पर चढ़जाता है। गोस्वामी तुलसीदासजी की कितनी ही चौपाइयां कहावतों के रूप में प्रचलित हैं। अंग्रेज़ी में शेक्सपियर के वाक्यों से सारा साहित्य भरा पड़ा है। फ़ारसी में जनता ने यह गौरव शेख़सादी को प्रदान किया है। इस क्षेत्र में वह फ़ारसी के समस्त कवियों से बढ़े चढ़े हैं। यहां उदाहरण के लिए कुछ वाक्य दिये जाते हैं—

अगर हिन्ज़िल ख़ुरी अज़ दस्ते ख़ुशख़ूय,
बेह अज़ शीरीनी अज़ दस्ते तुरुशरूय।

कवि रहीम के इस दोहे में यही भाव इस तरह दर्शाया गया है—

अमी पियावत मान विन, रहिमन हमें न सुहाय।
प्रेम सहित मरिवो भलो, जो विष देइ बुलाय॥

आनांकि ग़नीतरन्द मुहताजतरन्द ।
धन के साथ साथ तृष्णा भी बढ़ती जाती है।

हर ऐब कि सुल्तां बेपसन्दद हुनरस्त।
यदि राजा किसी ऐब को भी पसन्द करे तो वह हुनर हो जाता है।

हाजते मश्शाता नेस्त रूय दिलाराम रा।
सुन्दरता बिना शृंगार ही के मन को मोहती है॥
स्वाभाविक सौन्दर्य्य जो सोहे सब अंग माहिं।
तो कृत्रिम आभरन की आवश्यकता नाहिं॥

परतवे नेकां न गीरद हरकि बुनियादश बदस्त।
जिसकी प्रकृति अच्छी नहीं उस पर सज्जनों के सत्संग का कुछ असर नहीं, होता।

दुश्मन रा न तवां हक़ीर व वेचारा शुमुर्द।
शत्रु को कभी दुर्बल न समझना चाहिये॥

आक़वत गुर्गज़ादा गुर्ग शवद।
भेड़िये का बच्चा भेड़िया ही होता है॥

दर बाग़ लाला रोयेद व दर शोरा बूम ख़स।
लाला फूल, बाग़ में उगता है, ख़स जो ग्रास है, ऊसर में।

तवंगरी बदिलस्त न बमाल,
व बुज़ुर्गी बग्रक़लस्त न बसाल।

धनी होना धन पर नहीं वरन् हृदय पर निर्भर है और वृद्धता अवस्था पर नहीं वरन् बुद्धि पर निर्भर है।

सधन होन तैं होत नहिं, कोऊ लछिमीवान।
मन जाको धनवान है, सोई धनी महान॥

हसूद रा चे कुनम को ज़ेखुद बरंज दरस्त।

ईर्ष्यालु मनुष्य स्वयं ही ईर्ष्या-आग में जला करता है। उसे और सताना व्यर्थ है।

क़द्रे आफ़ियत कसे दानद कि बमुसीबत गिरफ़तार आयद।

दुःख भोगने से सुख के मूल्य का ज्ञात होता है।
विपति भोग भोगे गरू, जिन लोगनि बहु बार।
सम्पति के गुण जानहीं, वे ही भले प्रकार।

चु अज़वे बदर्द आवरद रोज़गार,
दिगर अज़बहारा न मानद क़रार।

जब शरीर के किसी अंग में पीड़ा होती है तो सारा शरीर व्याकुल हो जाता है।

हर कुजा चश्मये बुवद शीरीं,
मरदुमो मुर्गो मोर गिर्दायन्द।

विमल मधुर जल सों भरा, जहां जलाशय होय।
पशु पक्षी अरु नारि नर, जात जहां सब कोय॥

आरां कि हिसाब पाकस्त अज़ मुहासिबा चे बाक।

जिसका लेखा साफ़ है उसे हिसाब समझनेवाले का क्या डर ?

दोस्त आँ बाशद कि गीरद दस्ते दोस्त,
दर परेशाँ हाली ओ दरमाँदगी।

मित्र वही है जो विपत्ति में काम आवे।

तू पाक बाश बिरादर मदार अज़ कस बाक,
ज़नन्द जामये नापाक गाज़ुराँ बर संग।

कलह से दूर रह तो तेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सक्ता। धोबी केवल मैले कपड़े को पत्थर पर पटकता है।

चु अज़ क़ौमे यके बेदानिशी कर्द,
न केहरा मन्ज़िलत मानद न मेहरा।

किसी जाति के एक आदमी से बुराई हो जाती है तो सारी की सारी जाति बदनाम हो जाती है।

पाय दर ज़ंजीर पेशे दोस्ताँ,
बेह कि बा बेगानगाँ दर बोस्ताँ।

मित्रों के साथ बन्दीगृह भी स्वर्ग है पर दूसरों के साथ उपवन भी नर्क समान है।

नेक बाशी व बदत गोयद ख़ल्क़,
बेह कि बद बाशी व नेकत गोयन्द।

सत्मार्ग पर चलते हुए अगर लोग बुरा कहें तो यह उससे अच्छा है कि कुमार्ग पर चलते हुए लोग तुम्हारी प्रशंसा करें।

बातिलस्त उन्चे मुद्दई गोयद,
विपक्षी की बात मिथ्या समझी जाती है।

मर्द बायद कि गीरद अन्दर गोश,
गर नविश्तास्त पन्द बर दीवार।

मनुष्य को चाहिए कि यदि दीवार पर भी उपदेश लिखा हुआ मिले तो उसे ग्रहण करे।

हमराह अगर शिताब कुनद हमरहे तो नेस्त।
जल्दबाज़ का साथ अच्छा नहीं।

हक़ा कि बा उक़ूबत दोज़ख़ बराबरस्त,
रफ़तन ब पायमर्दी हमसाया दर बहिश्त।

पड़ोसी की सिफ़ारिश से स्वर्ग में जाना नर्क में जाने के तुल्य है।

रिज़्क़ हरचन्द बेगुमां बरसद,
शर्त अक़्लस्त जुस्तन अज़ दरहा।

यद्यपि भूखों कोई नहीं मरता, ईश्वर सब की सुधि लेता है, तथापि बुद्धिमान आदमी का धर्म है कि उसके लिए प्रयत्न करे।

बदोज़द तमा दीदये होशमन्द।
तृष्णा चतुर को भी अन्धा बना देती है।

गरदने बेतमा बुलन्द बुवद।
निस्पृह मनुष्य का सिर सदा ऊंचा रहता है।

निकोई बा बदां करदन चुनानस्त,
कि बद करदन बजाए नेक मरदां।

दुर्जनों के साथ भलाई करना सज्जनों के साथ बुराई करने के समान है।

यके नुक़सान माया दीगर शुमातत हमसाया।
गांठ से धन जाय लोग हंसे।

ख़ताये बुज़ुर्गां गिरफ़्तन ख़तास्त।
बड़ों की निन्दा करना भूल है।

ख़रे ईसा अगर बमक्का रवद,
चूं बयायद हनोज़ ख़र बाशद।
कौवा कभी हंस नहीं हो सकता।

जौरे उस्ताद बेह ज़मेहरे पिदर।
गुरु की ताड़ना पिता के प्यार से अच्छी है।

करीमांरा बदस्त अन्दर दिरम नेस्त,
ख़ुदावन्देन्यामतरा करम नेस्त।

दानियों के पास धन नहीं होता और धनी दानी नहीं होते।

परागन्दा रोज़ी परागन्दा दिल।
वृत्तिहीन मनुष्य का चित्त स्थिर नहीं रहता।

पेशे दीवार उन्चे गोई होशदार,
ता न बाशद् दर पसे दीवार गोश।
दीवार के भी कान होते हैं इसका ध्यान रख।

कि ख़ुब्स नफ़्स न गरदद् ब सालहा मालूम।
स्वभाव की नीचता सालों में भी नहीं मालूम होती।

मुश्क आनस्त कि खुद बबूयद, न कि अत्तार बगोयद।
कस्तूरी की पहचान उसकी सुगन्धि से होती है गन्धी के कहने से नहीं।

कि बिसियार ख़्वारस्त बिसियार ख़्वार।
पेटू आदमी का कभी आदर नहीं होता।

कुहन जामये ख़ेश आरास्तन,
वेह अज़ जामये आरियत ख़्वास्तन।

अपने पुराने कपड़ों की मरम्मत करके पहनना मंगनी के कपड़ों से अच्छा है।

चु सायल अज़ तो वज़ारी तलब कुनद चीज़े,
वेदेह वगर न सितमगर वज़ोर बसितानद।

जो आदमी दीनों को नहीं देता वह अत्याचारियों का शिकार होता है।

सखुनश तल्ख़ न ख़्वाही दहनश शीरीं कुन।

अगर किसी की कड़वी बात नहीं सुनना चाहते तो उसका मुंह मीठा करो।

मोरचगांरा चु बुवद इत्तफ़ाक़,
शेरेज़ियां रा वद्रानन्द पोस्त।

ऐसा संयोग भी आता है कि चिउंटियां शेर की खाल नोचती हैं।

हुनर बकार न आयद चु बख़्त बद्बाशद।
भाग्यहीन मनुष्य के गुण भी काम नहीं आते।

हरकि सुख़न न संजद अज़ जवाब बरंजद।
जो आदमी तौल कर बात नहीं करता उसे कठोर बातें सुननी पड़ती हैं।

अन्दक अन्दक बहम शवद बिसियार।
एक एक दाना मिलकर ढेर हो जाता है।

यद्यपि सादी ने जो उपदेश किये हैं वह अन्य लेखकों के यहां भी पाये जाते हैं, लेकिन फ़ारसी में सादी की सी ख्याति किसी ने नहीं पाई थी। इससे विदित होता है कि लोकप्रियता बहुत कुछ भाषा सौन्दर्य्य पर अवलम्बित होती है। यहां हमने सादी के कुछ वाक्य दिये हैं लेकिन यह समझना भूल होगी कि केवल यही प्रसिद्ध हैं। सारी गुलिस्ताँ ऐसे ही मार्मिक वाक्यों से परिपूर्ण है। संसार में ऐसा एक भी ग्रन्थ नहीं है जिसमें ऐसे वाक्यों का इतना आधिक्य हो जो कहावत बन सके हों।

गोस्वामी तुलसीदास जी पर यह दोषारोपण किया जाता है कि उन्होंने कई भ्रमोत्पादक चौपाइयां लिख कर समाज को बड़ी हानि पहुंचाई है। कुछ लोग सादी पर भी यही दोष लगाते हैं, और यह वाक्य अपने पक्ष के पुष्टि में पेश करते हैं —

अगर शहरोज़ रा गोयद शबस्त ईं,
बबायद गुफ़्त ईनक माहो परवीं।

अगर बादशाह दिन को रात कहे तो कहना चाहिये कि हां, हुजूर, देखिए चांद निकला हुआ है।

इसपर यह आक्षेप किया जाता है कि सादी ने बादशाहों की झूठी खुशामद करने का परामर्श दिया है। लेकिन जिस निर्भयता और स्वतन्त्रता से उन्होंने बादशाहों को ज्ञानोपदेश किया है उस पर विचार करते हुए सादी पर यह आक्षेप करना बिलकुल न्याय संगत नहीं मालूम होता। इस का अभिप्राय केवल यह है कि खुशामदी लोग ऐसा करते हैं। इसी तरह लोग इस वाक्य पर भी एतराज़ करते हैं —

दरोग़े मसलहत आमेज़ बेह, अज़ रास्ती फ़ितना अंगेज़।

वह झूठ जिस से किसी की जान बचे उस सच से उत्तम है जिस से किसी की जान जाय। कहा जाता है कि असत्य सर्वथा अक्षम्य है और सादी का यह वाक्य झूठ के लिये रास्ता खोल देता है। लेकिन विवाद के लिए

इस वाक्य की उपेक्षा चाहे की जाय, और आदर्श के उपासक चाहे इसे निन्द्य समझें, पर कोई सहृदय मनुष्य उसकी उपेक्षा न करेगा। इसके साथ ही सादी ने आगे चल कर एक और वाक्य लिखा है जिससे विदित होता है कि वह स्वार्थ के लिए किसी हालत में भी झूठ बोलना उचित नहीं समझते थे :

गर रास्त सुख़न गोई व दर वन्द वेमानी,
वेह ज़ांकि दरोग़त देहद अज़ वन्द रिहाई।

यदि सच बोलने से तुम क़ैद हो जाओ तो यह उस झूठ से अच्छा है जो क़ैद से मुक्त कर दे। इससे यह जान पड़ता है कि पहला वाक्य केवल दूसरों की विपत्ति के पक्ष में है, अपने लिए नहीं।

आठवां अध्याय

चरित्र ।

सादी उन कवियों में हैं जिनके चरित्र का प्रतिबिम्ब उनके काव्य रूपी दर्पण में स्पष्ट दिखाई देता है। उन के उपदेश उनके हृदय से निकलते थे और यही कारण है कि उनमें इतनी प्रबल शक्ति भरी हुई है। सैकड़ों अन्य उपदेशकों की भांति वह परमार्थ-ज्ञान का मार्ग दूसरों को दिखाकर स्वयं स्वार्थ पर जान न देते थे। दूसरों को न्याय, धर्म, और कर्तव्यपालन की शिक्षा देकर स्वयं विलासिता में लिप्त न रहते थे। उन की वृत्ति स्वभावतः सात्विक थी और कभी वासनाओं से उनका मन विचलित नहीं हुआ। अन्य कवियों की भांति उन्हों ने किसी राज दरबार का आश्रय नहीं लिया। लोभ को कभी अपने पास नहीं आने दिया। यश और ऐश्वर्य्य दोनों ही सत्कर्म के फल हैं। यश दैविक है, ऐश्वर्य्य मानुविक। सादी ने दैविक फल पर सन्तोष किया, मानुविक के लिए हाथ नहीं फैलाया। धन की देवी जो बलिदान चाहती हैं उसकी सामर्थ्य सादी में नहीं थी।

वह अपनी आत्मा का अल्पांश भी उसे भेंट न कर सकते थे। यही उनकी निर्भीकता का अवलम्ब है। राजाओं को उपदेश करना साँप के बिल में उँगली डालने के समान है। यहां एक पांव अगर फूलों पर रहता है तो दूसरा कांटों में। विशेष करके सादी के समय में तो राजनीति का उपदेश और भी जोखिम का काम था। ईरान और बग़दाद दोनों ही देशों में अरबों का पतन हो रहा था और तातारी बादशाह प्रजा को पैरों तले कुचले डालते थे। लेकिन सादी ने उस कठिन समय में भी अपनी टेक न छोड़ी। जब वह शीराज़ से दूसरी बार बग़दाद गये तो वहाँ हलाकूख़ाँ मुग़ल का बेटा अबाक़ाख़ाँ बादशाह था। हलाकूख़ाँ के घोर अत्याचार चंगीज़ और तैमूर की पैशाचिक क्रूरताओं को भी लज्जित करते थे। अबाक़ाख़ाँ यद्यपि ऐसा अत्याचारी न था तथापि उसके भय से प्रजा थर थर कांपती थी। उसके दो प्रधान कर्मचारी सादी के भक्त थे। एक दिन सादी बाज़ार में घूम रहे थे कि बादशाह की सवारी धूम धाम से उनके सामने से निकली। उनके दोनों कर्मचारी उनके साथ थे। उन्होंने सादी को देखा तो घोड़ों से उतर पड़े और उनका बड़ा सत्कार किया। बादशाह को अपने वज़ीरों की यह श्रद्धा देखकर बड़ा कुतूहल हुआ। उसने पूछा यह कौन आदमी है। वज़ीरों ने सादी का नाम और गुण बताया। बादशाह के हृदय में भी सादी की परीक्षा करने का विचार पैदा हुआ। बोला

कुछ उपदेश मुझे भी कीजिये। संभवतः उसने सादी से अपनी प्रशंसा करानी चाही होगी। लेकिन सादी ने बड़ी निर्भयता से यह उपदेश-पूर्ण शेर पढ़े :

> शहे कि पासे रऐयत निगाह मीदारद,
> हलाल बाद ख़िराजश कि मुज़्दे चौपानीस्त।
> वगर न राइये ख़ल्क़स्त ज़हरमारश बाद,
> कि हरचे मीख़ुरद अज़ जज़ियए मुसलमानीस्त।

भावार्थ — वह बादशाह जो प्रजापालन का ध्यान रखता है एक चरवाहे के समान है। यह प्रजा से जो कर लेता है वह उसकी मज़दूरी है। और यदि वह ऐसा नहीं करता तो वह हराम का धन खाता है।

अबाक़ाख़ाँ यह उपदेश सुन कर चकित हो गया। सादी की निर्भयता ने उसे भी सादी का भक्त बना दिया। उसने सादी को बड़े सम्मान के साथ विदा किया।

सादी में आत्मगौरव की मात्रा भी कम न थी। वह आन पर जान देने वाले मनुष्यों में थे। नीचता से उन्हें घृणा थी। एक बार इस्कन्दरिया में बड़ा अकाल पड़ा। लोग इधर उधर भागने लगे। वहां एक बड़ा सम्पत्तिशाली ख़ोजा था। वह ग़रीबों को खाना खिलाता और अभ्यागतों की अच्छी सेवा सम्मान करता। सादी भी वहीं थे। लोगों ने कहा आप भी

उसी खोजे के मेहमान बन जाइये। इसपर सादी ने उत्तर दिया —

"शेर कभी कुत्ते का जूठा नहीं खाता चाहे अपनी मांद में भूखों भले मर ही जाय।"

सादी को धर्मध्वजी-पन से बड़ी चिढ़ थी। वह प्रजा को मूर्ख और स्वार्थी मुल्लाओं के फन्दे में पड़ते देख कर जलजाते थे। उन्होंने काशी, मथुरा, वृन्दावन या प्रयाग के पाखण्डी पण्डों की पोपलीलायें देखी होतीं तो इस विषय में उनकी लेखनी अवश्य कुछ और तीव्र हो जाती। छत्रधारी और हाथी पर बैठने वाले महन्त, पालकियों में चंवर डुलाते चलने वाले पुजारी, घन्टों तिलक मुद्रा में समय खर्च करने वाले पण्डित, और राजा रईसों के दर्बार में खिलौना बननेवाले महात्मा उनकी समालोचना को कितना रोचक और हृदयग्राही बना देते? एक अवसर पर लेखक ने दो जटाधारी साधुओं को रेल गाड़ी में बैठे देखा। दोनों महात्मा एक पूरे कम्पार्टमेण्ट में बैठे हुए थे और किसी को भीतर न घुसने देते थे। मिले हुए कम्पार्टमेन्टों में इतनी भीड़ थी कि आदमियों को खड़े होने की जगह भी न मिलती थी। एक वृद्ध यात्री खड़े खड़े थक कर धीरे से साधुओं के डब्बे में जा बैठा। फिर क्या था। साधुओं की योग्य शक्ति ने प्रचण्ड रूप धारण किया, बुड्ढे को डांट बताई और ज्योंही स्टेशन आया, स्टेशन-मास्टर के पास जा

कर फ़रियाद की कि बाबा, यह बूढ़ा यात्री साधुओं को बैठने नहीं देता। मास्टर साहब ने साधुओं की डिगरी कर दी। भस्म और जटा की यह चमत्कारिक शक्ति देख कर सारे यात्री रोब में आ गये और फिर किसी को उनकी उस गाड़ी को अपवित्र करने का साहस नहीं हुआ। इसी तरह रीवां में लेखक की मुलाक़ात एक सन्यासी से हुई। वह स्वयं अपने गेरुवे बाने पर लज्जित थे। लेखक ने कहा आप कोई और उद्यम क्यों नहीं करते? बोले, अब उद्यम करने की सामर्थ्य नहीं, और करें भी तो कौन सा उद्यम करें। मेहनत मजूरी होती नहीं, विद्या कुछ पढ़ी नहीं, अब तो जीवन इसी भांति कटेगा। हां ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दूसरे जन्म में मुझे सद्बुद्धि दे और इस पाखण्ड में न फँसावे। सादी ने ऐसी हज़ारों घटनायें देखी होंगी, और कोई आश्चर्य्य नहीं कि इन्हीं बातों से उनका दयालु हृदय पाखण्डियों के प्रति ऐसा कठोर हो गया हो।

सादी मुसलमानी धर्मशास्त्र के पूर्ण पण्डित थे। लेकिन दर्शन में उनकी गति बहुत कम थी। उनकी नीति शिक्षा स्वर्ग और नर्क, तथा भय पर ही अवलम्बित है। उपयोगवाद तथा परमार्थवाद की उनके यहां कोई चर्चा नहीं है। सच तो यह कि सर्वसाधारण में नीति का उपदेश करने के लिए इनकी आवश्यकता ही क्या थी। वह सदाचार जिसकी नीति दर्शन के सिद्धान्तों पर होती है धार्मिक सदाचार से कितने ही

विषयों में विरोध करता है और यदि उसका पूरा पूरा पालन किया जाय तो संभव है कि समाज में घोर विप्लव मच जाय।

लेकिन सादी कोरे नीतोपदेशक ही न थे, वह बड़े सभाचतुर, और विनोदशील पुरुष थे। उच्च विचार के मनुष्यों में विनोद एक गुण है। कोई पक्षी आठों पहर आकाश में नहीं उड़ सकता। शेख़ सादी के हास्य के संबन्ध में बहुत सी कथायें प्रचलित हैं, और एक अश्लील काव्य ग्रन्थ है जो उनका लिखा हुआ बतलाया जाता है। यदि इन कथाओं पर विश्वास करें और इस काव्य को सादी का रचा हुआ मान लें तो सादी को नीतोपदेश का अधिकार ही न रहे। सादी चतुर अवश्य थे और जिस तरह राजा बीरबल की चतुराई को प्रदर्शित करने में लोगों ने कितनी ही गन्दी कथायें उनके गले मढ़ दी हैं, उसी तरह सादी के विवेकहीन प्रशंसकों ने भी उनके नाम को कलंकित कर दिया है। वास्तव में वह अश्लील कवितायें उनकी नहीं होसकतीं। उन में उनकी अनूठी रचनाशैली का बिलकुल पता नहीं।

सादी ने सन्तोष पर बड़ा ज़ोर दिया है। जो उनके सदाचार शिक्षा का एकमात्र मूलाधार है। वह स्वयं बड़े सन्तोषी मनुष्य थे। एक बार उनके पैरों में जूते नहीं थे, रास्ता चलने में कष्ट होता था। आर्थिक दशा भी ऐसी नहीं थी कि जूता मोल लेते। चित्त बहुत खिन्न हो रहा था। इसी विकलता में कूफ़ा की मस्जिद

में पहुंचे तो एक आदमी को मस्जिद के द्वार पर बैठे देखा जिस के पांव ही नहीं थे। उसकी दशा देख कर सादी की आंखें खुल गईं। मस्जिद से चले आये और ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उसने उन्हें पांव से तो वञ्चित नहीं किया। ऐसी शिक्षा इस बीसवीं शताब्दि में कुछ अनुपयुक्त सी प्रतीत होती है। यह असन्तोष का समय है। आजकल सन्तोष और उदासीनता में कोई अन्तर नहीं समझा जाता। और समाज की उन्नति असन्तोष की ऋणी समझी जाती है। लेकिन सादी की सन्तोषशिक्षा उद्योग की उपेक्षा नहीं करती। उनका कथन है कि यद्यपि ईश्वर समस्त सृष्टि की सुधि लेता है लेकिन अपनी जीविका के लिए यत्न करना मनुष्य का परम कर्तव्य है।

यद्यपि सादी की भाषा लालित्य का हिन्दी अनुवाद में दर्शाना बहुत ही कठिन है तथापि उनकी कथाओं और वाक्यों से उनकी शैली का भली भांति परिचय मिलता है। निस्संदेह वह समस्त साहित्यसंसार के एक समुज्ज्वल रत्न हैं, और मनुष्यसमाज के एक सच्चे पथप्रदर्शक। जब तक सरल भावों को समझने वाले, और भाषा लालित्य का रसास्वादन करने वाले प्राणी संसार में रहेंगे तब तक सादी का सुयश जीवित रहेगा, और उनकी प्रतिभा का लोग आदर करेंगे।